YouTube AJJ KA MUDDA

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक समाचार पत्र

Website : www.aajkamudda.com
Email:muddaaajka@gmail.com

आज का मुद्दा

नोएडा गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

नजर आपकी खबर आपकी

वर्ष : 14 अंक 331 नोएडा गौतमबुद्धनगर, रविवार 15 दिसंबर 2024 RNI-No. UPHIN/2011/37197 पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

श्रद्धांजलि देते हुए कहा-वह एक सांस्कृतिक राजदूत थे

राज कपूर की 100वीं जयंती पर पीएम ने किया याद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सिनेमा जगत के 'ग्रेट शो मैन' राज कपूर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रद्धांजलि दी। हाल ही में पीएम मोदी से कपूर फैमिली ने मुलाकात की थी। कपूर परिवार ने पीएम मोदी को राज कपूर की 100वीं जयंती पर आयोजित फेस्टीवल पर आने का न्यौता दिया था। इस मुलाकात के दौरान पीएम मोदी ने राज कपूर के योगदान का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था कि राज कपूर अपने समय से बहुत आगे थे, उन्होंने अपनी कहानियों के जरिए दुनिया भर के लोगों के बीच भारत को 'सॉफ्ट पावर' के रूप में स्थापित किया। राज कपूर की 100वीं जयंती पर उनके योगदान की तारीफ करते हुए

कहा, उन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर पहुंचाया। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया। लिखा, आज हम महान फिल्मकार, दूरदर्शी फिल्मकार, अभिनेता और सदाबहार शोमैन राज कपूर की 100वीं जयंती मना रहे हैं। उनकी प्रतिभा ने कई पीढ़ियों को प्रभावित किया और भारतीय और वैश्विक सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। दूसरी पोस्ट में पीएम मोदी ने लिखा, राज कपूर की फिल्मों के प्रतिष्ठित किरदार और अविस्मरणीय धुनें दुनिया भर के दर्शकों को पसंद आती हैं।

संभल में मुस्लिम बस्ती के बीच खुला मंदिर का ताला

46 साल बाद 'कैद' से निकले हनुमान और शिवलिंग

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल में अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान कई बरसों से बंद पड़े प्राचीन मंदिर के अंदर से चौंकाने वाला राज निकलकर सामने आया है। मुस्लिम आबादी के बीच संभल के इस मंदिर में करीब 46 साल के ताला नहीं खुला था। यहां लोगों ने अवैध रूप से कब्जा करके रखा था। यह प्राचीन हनुमान मंदिर बताया जा रहा है। यहां शिवलिंग और नंदी की मूर्ति भी मिली है। मूर्तियां सुरक्षित हैं लेकिन परिसर के कुंए को पाटने के साथ ही पीपल का पेड़ भी काटकर अवैध अतिक्रमण किया गया है।

संक्षिप्त समाचार

लालकृष्ण आडवाणी आईसीयू में भर्ती, हालत स्थिर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वे आईसीयू में भर्ती हैं। अस्पताल के मुताबिक उनकी हालत स्थिर है। 97 साल के आडवाणी को करीब दो दिन पहले अस्पताल लाया गया था। उनके परिवार ने बताया कि उन्हें सर्दी-खांसी की

परेशानी हुई थी, जो पॉल्यूशन के चलते और बढ़ गई। फिलहाल उन्हें 48 घंटे के लिए न्यूरोलॉजी विभाग में डॉ. विनीत सूरी की देखरेख में रखा गया हैं। कल के बाद उन्हें डिस्चार्ज किया जा सकता है। इससे पहले, 26 जून को दिल्ली में यूरोलॉजी डिपार्टमेंट की निगरानी में उनका एक छोटा ऑपरेशन हुआ था। अगले दिन उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। करीब एक हफ्ते बाद 3 जुलाई को रात 9 बजे अचानक तबीयत बिगड़ने पर उन्हें अपोलो में भर्ती कराया गया था।

महाराष्ट्र में फडणवीस कैबिनेट का विस्तार 15 दिसंबर को

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में फडणवीस सरकार की कैबिनेट का विस्तार 15 दिसंबर को होगा। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रियों का शपथ ग्रहण समारोह नागपुर में होगा। इसमें 30 से 32 मंत्री शपथ ले सकते हैं। महाराष्ट्र कैबिनेट में मुख्यमंत्री समेत ज्यादा से ज्यादा 43 सदस्य हो

सकते हैं। सूत्रों का कहना है कि भाजपा को 20-21 मंत्री पद मिलने की संभावना है। जबकि शिवसेना को 11-12 और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को 9-10 मंत्री पद मिल सकते हैं। संभावित मंत्रियों को शपथ के लिए मुख्यमंत्री फडणवीस खुद फोन करेंगे। महाराष्ट्र भाजपा प्रमुख बावनकुले ने कैबिनेट फाइनल करने के लिए डिप्टी सीएम शिंदे और पवार से चर्चा की।

स्विट्जरलैंड ने भारत का मोस्ट फेवर्ड नेशन दर्जा किया खत्म

बर्न (एजेंसी)। स्विट्जरलैंड सरकार ने भारत से मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापस ले लिया। स्विस सरकार के इस फैसले के बाद अब वहां काम करने वाली भारतीय कंपनियों को 1 जनवरी 2025 से 10 फीसदी टैक्स ज्यादा टैक्स देना होगा। स्विट्जरलैंड ने डबल टैक्स

अवॉइडेंस एग्रीमेंट के तहत भारत को एमएफएन राष्ट्र का दर्जा दिया था। शुक्रवार को स्विट्जरलैंड की तरफ से कहा गया भारतीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले की वजह से उसे यह कदम उठना पड़ा है। नेस्ले से संबंधित मामले में एससी ने फैसला दिया था कि इसे तब तक लागू नहीं किया जा सकता जब तक कि इसे इनकम टैक्स एक्ट के तहत नोटिफाई न किया जाए।

भाजपा सरकार ने युवाओं-किसानों के अंगूठे काटे

● अनुराग का जवाब-आपकी सरकार में सिखों के गले काटे गए ● राहुल गांधी बोले-सरकार ने अडाणी को पोर्ट-एयरपोर्ट सब दिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में शनिवार को लगातार दूसरे दिन संविधान पर चर्चा चल रही है। शनिवार को शुरुआत संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजु ने की। इसके बाद डीएमके सांसद ने कहा कि भाजपा हिंदू राष्ट्र बनाना चाहती है। इस पर विवाद हुआ। भाजपा ने कहा कि आप सबूत दीजिए। राहुल गांधी की स्पीच हुई। राहुल सावरकर पर बोले, एकलव्य-द्रोणाचार्य की कहानी सुनाई। भाजपा सरकार पर युवाओं का अंगूठा काटने का आरोप लगाया। राहुल ने कहा- जैसे एकलव्य का अंगूठा काटकर द्रोणाचार्य ने उनका हुनर ले लिया था। उसी तरह भाजपा सरकार अग्निवीर से युवाओं का अंगूठा काट रही है। अडाणी को सारे कारोबार, इंडस्ट्री, पोर्ट, एयरपोर्ट देकर किसानों और युवाओं का गला काटा जा रहा है। राहुल के बयान पर युवा मामलों के मंत्री अनुराग ठाकुर ने जवाब दिया। उन्होंने कहा- आप अंगूठा काटने की बात कर रहे हैं। आपकी सरकार में तो सिखों के गले काटे गए, आपको देश से माफी मांगनी चाहिए। राहुल ने कहा,सावरकर बोलते थे कि भारत के संविधान के बारे में सबसे बुरी बात यह है कि इसमें कुछ भी भारतीय नहीं है। वे मनु स्मृति की बात करते थे।

धर्म के नाम पर आरक्षण देना चाहते हैं इसलिए कर रहे हैं ऐसा 'खेला'

● पीएम मोदी ने लोकसभा में कांग्रेस और राहुल गांधी को निशाने पर लिया, परिवार को घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। संविधान के 75 साल पूरे होने के मौके पर शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में संविधान पर बोले। प्रधानमंत्री ने कहा- अच्छा होता कि संविधान की शक्ति पर चर्चा होती। दलगत भावना से उबरकर संविधान पर चर्चा करते। लेकिन कुछ लोगों की मजबूरियां होती हैं। मैं बोलना नहीं चाहता था, लेकिन तथ्य रखना जरूरी है। पीएम बोले- कांग्रेस के एक परिवार ने संविधान को चोट पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। एक परिवार का उल्लेख इसलिए करता हूं कि 75 साल में से 55 साल एक ही परिवार ने राज किया है। देश को क्या-क्या हुआ है, ये जानने का अधिकार है। इस परिवार के कुविचार, कुरीति, कुनीति की परंपरा निरंतर चल रही है। हर स्तर पर इस परिवार ने संविधान को चुनौती दी है। मोदी बोले- संविधान संशोधन करने का ऐसा खून कांग्रेस के मुंह लग गया कि वे समय-समय पर संविधान का शिकार करती रही। संविधान की आत्मा को लहुलुहान करती रही। करीब 6 दशक में 75 बार संविधान बदला गया। यह धर्म के आधार पर आरक्षण देना चाहते हैं इसलिए लगातार इस तरह का खेल खेल रहे हैं।

● **शाहबानो केस को लेकर कांग्रेस पर पीएम मोदी का निशाना**- पीएम मोदी ने कहा, इनके मुंह पर खून लग गया था। ये परंपरा नेहरू ने शुरू की उसे इंदिरा गांधी ने इसे आगे बढ़ाया। जब राजीव गांधी पीएम बने तो उन्होंने सबको समानता सबको न्याय की भावना को ठेस पहुंचाई। सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो मामले में फैसला किया, कोर्ट से महिला को हक मिला था। लेकिन राजीव गांधी ने शाहबानो और कोर्ट की उस भावना को नकार दिया। और वोट बैंक की राजनीति के सामने भावना का अपमान किया और कट्टरपंथियों का साथ दिया। संसद में कानून बनाकर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को एक बार फिर बदल दिया।

● **इमरजेंसी के समय इंदिरा गांधी ने घोटा लोकतंत्र का गला**- इसके बाद जब असैंवाधानिक तरीके से चुनाव लड़ने के कारण अदालत ने इंदिरा गांधी के चुनाव पर रोक लगा दी, तो उन्होंने अपनी कुर्सी बचाने के लिए इमरजेंसी लगा दी। उन्होंने भारत के लोकतंत्र का गला घोंटने का काम किया। इमरजेंसी के समय देश के लोगों के अधिकार छीने गए, अखबारों की आजादी पर ताले लगाए, लोकतंत्र का गला घोट दिया, जिस जज ने इंदिरा गांधी के चुनाव लड़ने के खिलाफ आदेश दिया था, उन्हें मुख्य न्यायधीश नहीं बनने दिया गया। 1951 में जब चुनी हुई सरकार नहीं थी, तब भी कांग्रेस ने संविधान को बदला और अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला किया। ये संविधान निर्माताओं का भी अपमान था। 1951 में कांग्रेस ने ये पाप किया था। तो राष्ट्रपति ने कहा ये गलत हो रहा है। स्पीकर ने कहा इसे रोको, लेकिन नेहरू नहीं माने।

शंभू बॉर्डर पर किसान ने की खुदकुशी की कोशिश

● दिल्ली मार्च पर भेजा गया दल वापस बुलाया गया ● पुलिस ने किसानों पर आंसू गैस-पानी की बौछार छोड़ी

शंभू बॉर्डर (एजेंसी)। हरियाणा-पंजाब के शंभू बॉर्डर पर शनिवार को किसान ने आत्महत्या की कोशिश की है। उसने धरना स्थल के पास सल्फास निगला। इसके बाद उसे अस्पताल ले जाया गया। किसान नेता अस्पताल पहुंच रहे हैं। किसान की पहचान लुधियाना के खन्ना के रहने वाले जोद सिंह के रूप में हुई है। वह शनिवार को ही मोर्चे में पहुंचा था। संभावना है कि किसानों को दिल्ली न जाने देने से आहत होकर उसने ये कदम उठाया। इससे पहले दोपहर 12 बजे 101 किसान दिल्ली के लिए रवाना हुए, लेकिन पुलिस ने उन्हें घग्गर नदी पर बने पुल पर की बैरिकेडिंग पर रोक लिया। 40 मिनट तक पुलिस से बहस के बाद किसानों ने बैरिकेडिंग तोड़ने की कोशिश की। इसके बाद पुलिस ने आंसू गैस और वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। जिसमें 10 किसान घायल हुए। करीब 2 घंटे बाद यानी 2 बजे किसानों

के जत्थे को वापस बुला लिया गया। किसानों का आरोप है कि पुलिस ने रॉकेट लॉन्चर से बम-गोलियां चलाई। घग्गर नदी का गंदा और केमिकल वाला पानी प्रयोग किया। किसान नेता सरवण पंधेर ने कहा कि 16 दिसंबर को पंजाब को छोड़कर पूरे देश में ट्रैक्टर मार्च निकाले जाएंगे। 18 दिसंबर को पंजाब में 12 बजे से 3 बजे तक रेल रोको अभियान चलाया जाएगा। 18 तक कोई जत्था दिल्ली कूच नहीं करेगा। मार्च के मद्देनजर हरियाणा सरकार ने अंबाला जिले के 12 गांवों में इंटरनेट बैन 18 दिसंबर तक बढ़ा दिया है। खनौरी बॉर्डर पर संयुक्त किसान मोर्चा (नॉन पॉलिटिकल) के नेता जगजीत डल्लेवाल लगातार 19वें दिन आमरण अनशन पर बैठे हुए हैं। किसान नेता सरवण पंधेर ने कहा कि डल्लेवाल की सेहत को लेकर पूरा देश चिंतित है, लेकिन देश के प्रधानमंत्री नहीं। सिरसा से कांग्रेस की सांसद कुमारी सैलजा ने केंद्र सरकार से मांग की है कि किसानों की मांगों को मान कर राहत दी जाए। उन्होंने कहा कि किसान अपनी मांगों को लेकर लंबे समय से आंदोलन कर रहे हैं, लेकिन सरकार उनकी मांगों को मानने की जगह उन पर आंसू गैस के गोले व डंडे बरसा रही है। किसानों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करना उचित नहीं है। पंधेर ने कहा कि एक्सपायरी आंसू गैस के गोले छोड़े गए। ये एक्सपायरी गोले इसलिए छोडे जाते हैं, ताकि कभी आयोग इस मामले की जांच करे तो यह चीज रिकॉर्ड में न आए।

मुसलमान मुसलमान रहे, ईसाई ईसाई, बस हिंदू को सेक्युलर रहना होगा

● विपक्ष के 'पाखंड' पर संसद में बरसे तेजस्वी सूर्या, डीएमको को घेरा

नई दिल्ली/बेंगलुरु (एजेंसी)। बीजेपी युवा मोर्चा के अध्यक्ष और बंगलुरु दक्षिण से सांसद तेजस्वी सूर्या ने आज लोकसभा में भीमराव आंबेडकर का जिक्र कर विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। सूर्या ने कहा कि कांग्रेस के अनुसार, मुसलमान मुसलमान हो सकता है, ईसाई ईसाई हो सकता है, लेकिन हिंदू को धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज मैंने कम्युनिस्ट पार्टी के विपक्षी सदस्य को सुना कि आरएसएस आंबेडकर और आंबेडकर के संविधान के खिलाफ थी। ये बात सच से बहुत दूर है। एक बार नहीं, बल्कि दो बार कांग्रेस और कम्युनिस्ट ने साथ मिलकर चुनाव में बाबा साहेब आंबेडकर को जीतने से रोकने के लिए काम किया।

नगर पालिका परिषद दादरी परिक्षेत्र में कोई भी निराश्रित मानव ठंड मैं नहीं रहेगा : शालिनी गुप्ता

आज का मुद्दा

गौतमबुद्धनगर : नगर पालिका परिषद दादरी की अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता ने दादरी नगर में ठंड से लोगों को बचाने हेतु भिन्न-भिन्न प्रकार की सुविधाओं का इंतजाम किया है जिसमें शहर के लगभग 25 जगह अलाब की व्यवस्था की गई है जिससे आते-जाते लोगों को ठंड से राहत मिल सके

नगर पालिका परिषद दादरी के अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता ने इस संवाददाताओं को बताया कि शहर में ठंड की रोकथाम हेतु लगभग 25 जगह अलाब की व्यवस्था की गई है जिससे आने जाने वाले लोगों को ठंड से राहत दिलाई जा सके

नगर पालिका परिषद दादरी की अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता ने बताया कि नगर पालिका परिषद दादरी की अध्यक्ष गीता शर्मा के निर्देशन में नगर पालिका परिषद दादरी की

अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता के नेतृत्व में ठंड से बचने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयोग किए जा रहे हैं शहर में निराश्रित गरीबों के लिए कंबल वितरण से लेकर अलाब तथा रात्रि में विश्राम हेतु दादरी तिराहे पर अस्थाई शेल्टर हाउस रेन बसेरा का निर्माण नगर पालिका परिषद दादरी द्वारा किया गया है

नगर पालिका परिषद दादरी की अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता ने

बताया कि आमका रोड स्थित रेन बसेरा नगर पालिका परिषद दादी द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसमें दादरी परिक्षेत्र में आने वाले लोगों को रात्रि विश्राम की विशेष सुविधा उपलब्ध की गई है साथ ही शौचालय एवं स्नान हेतु उच्च स्तर के प्रबंध किए गए हैं

नगर पालिका परिषद दादरी की अधिशासी अधिकारी ने स्वयं जाकर रैन बसेरे का निरीक्षण किया तथा रात्रि

में अलाव स्थल पर जाकर सुचारू रूप से चल रहे अलाब व्यवस्था का जायजा लिया साथ ही रैन बसेरे में विश्राम कर रहे लोगों से उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जाना जिससे रैन बसेरे में निवास कर रहे ज्यादातर लोग संतुष्ट दिखाई दिए

नगर पालिका परिषद दादरी परिक्षेत्र में बनाए गए रैन बसेरे में रह रहे लोगों ने वहां उपस्थित सुविधाओं के बारे में बताया कि नगर पालिका परिषद दादरी द्वारा विशेष प्रकार की सुविधा उनको उपलब्ध कराई जा रही हैं रैन बसेरे में सर्दी से बचने के लिए हीटर आदि के साथ-साथ साफ शुद्ध कंबल और साफ शुद्ध बेडशीट वितरण किया जा रहे हैं साथ ही नहाने और उचित शुद्ध शौचायलयों का होना नगर पालिका परिषद दादरी के कुशल नेतृत्व की गवाही देता है

नगर पालिका परिषद दादरी के अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता ने

बताया कि लगातार रैन बसेरे और अलाब स्थल के निरीक्षण हेतु वह शहर मैं लगातार भ्रमण करती रहेगी साथ ही नगर पालिका परिषद दादरी की स्पेशल टीम इस पर निगरानी रखेगी और कोई कोताही रैन बसेरे और अलाव स्थल पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी अगर किसी भी कर्मचारी के द्वारा कोताही या लापरवाही की गई तो उसके खिलाफ नगर पालिका परिषद दादरी सख्त से सख्त कार्रवाई करेगी

दहेज उत्पीड़न के मामलों में अदालतों की न्याय व्यवस्था पर उठते सवाल

मनोज कुमार अग्रवाल

अतुल ने जो कदम उठाया वह उचित नहीं ठहराया जा सकता है बेहतर होता कि वह न्यायालय के भ्रष्टाचार को किसी तरह प्रूफ बना कर उजागर करता और अपने माता-पिता के बुढ़ापे का भी ख्याल करता सिर्फ रील बनाने या 23 पेज का बयान लिखकर जान गंवाने से बेहतर था कि वह अपना संघर्ष जारी रखता। एक इंजीनियर होने के बावजूद उसने अपने जीवन का फैसला बेहद गलत किया क्योंकि जीवन खत्म करने के बाद कोई न्याय प्रतिपूर्ति नही कर सकता है।

देश में बनने वाला हर कानून नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए बनाया जाता है, ताकि हर पीड़ित को इंसाफ और उसका हक मिल सके। महिलाओं के साथ होने वाले तमाम तरह के अपराधों, शारीरिक-मानसिक शोषण, प्रताड़ना और हिंसा से उन्हें बचाने के लिए उन्हें कई कानूनी कवच दिए गए हैं, इससे उनकी स्थिति पहले से मजबूत हुई है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाएं गए कानूनों का दुरुपयोग बढ़ा है। आरोप लगाए जा रहे हैं कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने कानून व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे है। असंतुष्ट पत्नियां दहेज विरोधी कानून का भी दुरुपयोग धड़ल्ले से कर रही हैं।

ऐसी घटनाएं वास्तव में देखने को मिली हैं कि पति से संबंध तोड़ने से पहले नाराज पत्नियां हिंसा और उत्पीड़न का इल्जाम न सिर्फ पति के पूरे परिवार, बल्कि दूरदराज के रिश्तेदारों पर भी लगा देती हैं। अकसर ऐसे आरोप कोर्ट में सिद्ध नहीं होते, मगर उसके पहले आरोपी बनाए गए व्यक्तियों को कोर्ट-कचहरी की प्रक्रिया के दौरान लंबी परेशानी से गुजरना पड़ता है। ऐसा ही एक मामला सामने आया है, जिसने इस कानून के दुरुपयोग को उजागर किया है। परिवार की कलह से तंग आ चुके एक एआई इंजीनियर ने आत्महत्या कर ली है, जिसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। दरअसल सोशल मीडिया पर एक घंटा 20 मिनट का यह वीडियो वायरल हुआ है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) इंजीनियर अतुल सुभाष ने इस वीडियो को रिकॉर्ड करने के बाद बेंगलुरु स्थित अपने घर में फांसी लगा ली थी। वीडियो में अतुल ने पत्नी की ओर से दर्ज कराए गए दहेज प्रताड़ना के आरोप से पैदा हुई परिस्थितियों पर अपनी बात रखी है। उन्होंने लिखा है कि उनकी पत्नी और ससुराल वाले उनके ही पैसे से उन्हें प्रताड़ित कर रहे हैं। उनका आरोप है कि उनकी पत्नी उन्हें उनके बेटे से न मिलने देती है और न ही फोन पर बात कराती है। अतुल ने 24 पत्रों का एक सुसाइड नोट लिखा है, जिसमें अपनी पत्नी के साथ-साथ ससुराल वालों के खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाए हैं। सुभाष के मामले ने दहेज कानून के दुरुपयोग पर बहस शुरू कर दी है। मूल रूप से बिहार के समस्तीपुर जिले का रहने वाला अतुल अपनी नौकरी के चलते बेंगलुरु में रहता था। उनका ससुराल उत्तर प्रदेश के जौनपुर में था। उसने अपने सुसाइड नोट में पत्नी, ससुराल वालों और एक न्यायाधीश पर आत्महत्या, उत्पीड़न, जबरन वसूली और भ्रष्टाचार के लिए उकसाने का आरोप लगाया। ससुरालवालों पर आरोप है कि उन्होंने झूठा मामला दर्ज कराया और मामले के निपटारे के लिए 3 करोड़ रुपये देने की मांग की थी। आरोप है कि अतुल ने मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित होकर आत्महत्या जैसा घातक कदम उठा लिया। सुसाइड नोट के हर पन्ने पर न्याय मिलना चाहिए लिखा है। पत्नी निकिता और ससुराल वालों के साथ-साथ सुभाष ने जौनपुर में एक पारिवारिक न्यायालय के जज पर भी उनकी सुनवाई न करने का आरोप लगाया है। सुभाष ने अपने कथित उत्पीड़न को बताने के लिए एक वीडियो भी रिकॉर्ड किया। इसमें परिजनों से कहा गया है कि न्याय मिलने तक उनकी अस्थियों को विसर्जित न किया जाए। नोट में चार साल के बेटे के लिए भी एक संदेश था जिसे अतुल ने अलग से रखा था। नोट में अतुल ने अपने माता-पिता को उनके बच्चे की कस्टडी देने की भी मांग की। नोट और वीडियो का लिंक एक एनजीओ के व्हाट्सएप ग्रुप पर भेजा गया था, जिससे अतुल जुड़े हुए थे। सुभाष ने अपने नोट में आरोप लगाया कि पत्नी निकिता सिंघानिया ने उनके खिलाफ हत्या, यौन उत्पीड़न, पैसे के लिए उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और दहेज सहित नौ मामले दर्ज कराए थे। दरअसल दहेज कुप्रथा को रोकने के लिए हमारे देश में कई कानून बनाए हैं। असहाय महिलाओं के खिलाफ हिंसा को कम करने के लिए कानून बनाने पर जोर दिया गया था। इसके चलते दहेज निषेध अधिनियम, 1961 बना। दहेज की मांग के बाद घरेलू हिंसा की घटनाएं भी सामने आती रही हैं ऐसे में 'घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 पारित किया गया। इसके साथ ही पुरानी आईपीसी में दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्याओं को रोकने के लिए कई प्रावधान किए गए थे। आईपीसी की धारा 498 दहेज से पहले और बाद में किसी भी रूप में उत्पीड़न को दंडनीय और गैर-जमानती बनाती है। 1983 में संसद द्वारा एक आपराधिक अधिनियम 'आईपीसी 498 ए' पारित किया था जो कहता था कि दहेज वसूलने के लिए की गई क्रूरता पर तीन या अधिक वर्षों की अवधि की सजा और जुमार्ना देना होगा। दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्याओं को रोकने के लिए आईपीसी 1961 में एक नई धारा' आईपीसी 304 बी' जोड़ी गई। आईपीसी 304 बी में 'दहेज हत्या' का जिक्र है। भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी में कहा गया है कि अगर किसी महिला की शादी के सात साल के भीतर किसी भी प्रकार के जलने या शारीरिक चोट से मृत्यु हो जाती है या यह पता चला है कि उसकी मृत्यु से पहले वह अपने पति या पति के किसी अन्य रिश्तेदार द्वारा क्रूरता या उत्पीड़न के संपर्क में थी और इसका दहेज मांगने से संबंध है तब महिला की मृत्यु को दहेज मृत्यु माना जाएगा। दहेज हत्या के लिए सजा सात साल के कारावास की न्यूनतम सजा या आजीवन कारावास की अधिकतम सजा है। कानून पारित होते ही दहेज उत्पीड़न के हजारों मामले दर्ज होने लगे। कई बार यह विवाहित महिला के लिए सुरक्षा के बजाय हथियार बन गया जिस पर समय-समय पर अदालतों ने भी चिंता जताई। अतुल का मामला सामने आने के बाद एक बार फिर से शीर्ष न्यायालय ने चिंता जतायी है। सुप्रीम कोर्ट में एक अलग मामले में महिलाओं द्वारा अपने पतियों के खिलाफ दर्ज कराए गए वैवाहिक विवाद के मामलों में क्रूरता कानून के दुरुपयोग के खिलाफ चेतावनी दी। अदालत ने कहा है कि दहेज उत्पीड़न के मामलों में अदालतों को कानून का दुरुपयोग रोकने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए और पति के सगे-संबंधियों को फंसाने की प्रवृत्ति को देखते हुए निर्दोष परिवार के सदस्यों को अनावश्यक परेशानी से बचाना चाहिए। जस्टिस बी. वी. नागरत्ना और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि वैवाहिक विवाद से उत्पन्न आपराधिक मामले में परिवार के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी को इंगित करने वाले विशिष्ट आरोपों के बिना उनके नाम का उल्लेख शुरू में ही रोक दिया जाना चाहिए। हाल के वर्षों में देश भर में वैवाहिक विवादों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, साथ ही विवाह संस्था के भीतर कलह और तनाव भी बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप, आईपीसी की धारा 498 ए (पत्नी के खिलाफ पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता) जैसे प्रावधानों का दुरुपयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ताकि पत्नी द्वारा पति और उसके परिवार के खिलाफ व्यक्तिगत प्रतिशोध को बढ़ावा दिया जा सके। देखा जाए तो जरूरत है कि इस कानून की समीक्षा की जाए। ऐसा नहीं है कि महिलाओं पर उत्पीड़न कम हो गया है और सभी मामले झूठे दर्ज कराए जाते हैं, लेकिन कुछ झूठे मामले जरूर सामने आ रहे हैं। इन कानूनों का उद्देश्य महिलाओं की सुरक्षा है। लेकिन इसे संतुलित रूप से लागू करना होगा, ताकि इनके दुरुपयोग को रोका जा सके।

अतुल ने जो कदम उठाया वह उचित नहीं ठहराया जा सकता है बेहतर होता कि वह न्यायालय के भ्रष्टाचार को किसी तरह प्रूफ बना कर उजागर करता और अपने माता-पिता के बुढ़ापे का भी ख्याल करता सिर्फ रील बनाने या 23 पेज का बयान लिखकर जान गंवाने से बेहतर था कि वह अपना संघर्ष जारी रखता। एक इंजीनियर होने के बावजूद उसने अपने जीवन का फैसला बेहद गलत किया क्योंकि जीवन खत्म करने के बाद कोई न्याय प्रतिपूर्ति नही कर सकता है।

संपादकीय

बन गई बात

एक देश-एक चुनावह्न को लागू करने संबंधी विधेयकों को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दे दी, मसौदा कानून मौजूदा शीतकालीन सत्र में संसद में पेश किए जाने की संभावना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह फैसला लिया गया। सरकार विधेयकों पर व्यापक विचार-विमर्श करने को इच्छुक है। जिन्हें संसदीय समिति को भेजे जाने की संभावना है। सरकार विभिन्न विधानसभाओं के अध्यक्षों से परामर्श करने की इच्छुक है। इसमें विधानसभाओं को भंग करने और एकसाथ चुनाव शब्द को सम्मिलित करने के लिए अनुच्छेद 327 में संशोधन करने से संबंधित प्रावधान भी है। सिफारिश में कहा गया है, विधेयक को कम से कम 50 फीसद राज्यों से अनुमोदित करने की आवश्यकता नहीं होगी। एक अन्य विधेयक केंद्र शासित प्रदेशों व पुडुचेरी, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर से सबंधित तीन कानूनों के प्रावधानों में संशोधन करने वाला सामान्य विधेयक होगा। अपने देश में एक चुनाव की बात अनूठी नहीं है। क्योंकि आजादी के बाद के वर्षो में भारत में एक ही चुनाव होता था। यानी सभी राज्यों के विधानसभा व लोक सभा चुनाव साथ हुआ करते थे। मोदी प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही विभिन्न मौकों पर देश भर में एक चुनाव कराने की बात करते रहे हैं। हालांकि भारत में एक चुनाव कराना सरकार के लिए आसान नहीं है, परंतु प्रधानमंत्री चाहते हैं राज्यों व केंद्र में साथ में चुनाव हों ताकि संसाधनों व धन का अपव्यय रोका जा सके। अभी साल में कई दफा देश में कहीं-न-कहीं चुनाव हो रहे होते हैं; जिन पर राजनीति होती रहती है, चुनाव आयोग व सुरक्षा तंत्र व्यस्त रहता है। विपक्ष को बार-बार उंगली उठाने का मौका मिलता है। सरकार की दलील है कि एक देश-एक चुनाव से राजकोष में बचत होगी। आचार संहिताओं के चलते विकास परियोजनाओं में रुकावटें नहीं आएंगी। चुनाव के दौरान काले धन के उपयोग के आरोपों से निपटने में एजेंसियों को सुविधा होगी। हालांकि इसका विरोध करने वाले कहते हैं कि देश भर में जितने संसाधनों की जरूरत होगी, उसके लिए सरकार को बजट बढ़ाना होगा। देश के तमाम क्षेत्रीय व छोटे दलों के लिए एक साथ चुनाव का भारी नुकसान हो सकता है। जैसा कि हम जानते हैं, विधानसभा व लोक सभा चुनाव के मुद्दे काफी अलग होते हैं। एक ही चुनाव होने पर इनका पैटर्न बदल जाएगा। क्षेत्रीय दलों के लिए बड़ी राजनीतिक पार्टियों से मुकाबला करना दूभर हो सकता है, परंतु जैसा कि 62 दलों में से 32 चुनाव के पक्ष में हैं। 15 ने विरोध किया है। इसलिए सरकार आम सहमति बनाने का भरसक प्रयास करे।

चिंतन-मनन

बाहरी विकार

एक व्यक्ति संन्यासी के पास पहुंचा और बोला, बाबाजी! मुझे परमात्मा से मिला दो। संन्यासी ने बात टालनी चाही। लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। संन्यासी ने उसकी भावना परखने की दृष्टि से कहा, भगवान से मिलना है तो कल आना होगा। दूसरे दिन फिर यही उत्तर मिला। लेकिन वह निराश नहीं हुआ, निरन्तर आता रहा। संन्यासी ने देखा,इसे शब्दों से समझाना कठिन है। आखिर उसे एक युक्ति सूझी। कहा, परमात्मा से मिलने के लिए तो ऊपर चढ़ना होगा। उसने स्वीकृति दे दी। संन्यासी ने उसके सिर पर पांच बड़े-बड़े पत्थर रखे और पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ने के लिए कहा। दो चार कदम चला होगा कि उसकी सांस फूलने लगी और वह वहीं रूक गया।

संन्यासी बोले, यहां बैठने से भगवान नहीं मिलेंगे। वह साहस बटोरकर चला, लेकिन असफल रहा। संन्यासी ने उसके सिर पर से एक पत्थर उतार दिया। वह कुछ दूर चला फिर रूक गया। चलते-चलते पांचों पत्थर नीचे गिरा दिए गए। वह पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया।

संन्यासी बोला- समझे या नहीं।

उसने उत्तर दिया- मैं कुछ नहीं समझा। आप समझा दीजिए।

संन्यासी- जब तक तुम्हारे सिर पर पत्थर थे, तुम चल नहीं सके और हल्के होकर चोटी तक पहुंच गए। इन बाहरी पत्थरों में भी इतनी शक्ति है तो हमारे भीतर काम, प्रोध, मद, लोभ और भय रूप जो पांच बड़े-बड़े पत्थर हैं, उनको उतारे बिना भगवान तक कैसे पहुंचोगे? इसलिए इन पाषाणों से हल्का बनने के लिए साधुओं का सान्निध्य पाना आवश्यक है।

जनहित के लिए संविधान पर प्रियंका का पहला भाषण

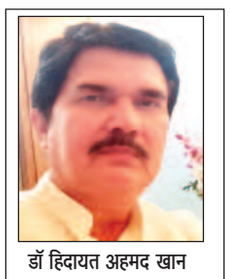

डॉ हिदायत अहमद खान

अधिकांश नेताओं के राजनीतिक भाषण अक्सर लोकलुभावन वादों से परिपूर्ण सुनहरे सपने दिखाने वाले होते हैं। इससे परे जब बात संसद में भाषण देने की होती है तो सत्यता के साथ तथ्यात्मकता, गंभीरता और जिम्मेदारी का ध्यान रखा जाता है। इस आधार पर संसद के शीतकालीन सत्र में संविधान पर चर्चा के दौरान वायनाड सांसद प्रियंका गांधी द्वारा दिया गया भाषण वाकई काबिले जिक्र है। इस पर चर्चा इसलिए भी जरुरी हो जाती है क्योंकि प्रियंका का यह लोकसभा में दिया गया पहला भाषण था। इसके जरिए प्रियंका गांधी ने जहां सत्तारूढ़ सरकार पर तीखा हमला बोला वहीं उन्होंने संविधान की अहमियत और जनता के अधिकारों की रक्षा पर भी प्रभावी ढंग से अपनी बात रखी। यही वजह है कि उनके भाषण की तारीफ विपक्ष के अनेक वरिष्ठ नेताओं ने मुक्तकंठ से की है। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने तो उनके भाषण को स्वयं द्वारा संसद में दिए गए पहले भाषण से बेहतर बताया है, जबकि राहुल और प्रियंका गांधी की मॉ और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने इसे एक्सीलेंट कहा है। यही नहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी प्रियंका की स्पष्टता और साहसिक वक्तव्य की सराहना की है। यहां सवाल यह उठता है कि आखिर प्रियंका ने अपने पहले भाषण में ऐसा क्या कहा जिसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। दरअसल प्रियंका ने संविधान पर चर्चा में हिस्सा लेते हुए कहा कि वर्तमान सरकार ने देश में भय का ऐसा वातावरण बना दिया है, जैसा अंग्रेजों के राज में था। यह तो सभी कहते आ रहे हैं और इसमें नया कुछ भी नहीं है, लेकिन जिस मंच से यह बात उठाई गई औरजिस प्रभावी ढंग से रखी गई वही इसे विचारणीय बना देती है। इस बात को उन्होंने प्रभावी ढंग से कहा, कि आज का राजा आलोचनाओं से डरता है। विपक्षी नेताओं को जेल में डाला जा रहा है। जनता के बीच जाने का साहस नहीं है। देश के वर्तमान हालात का नक्शा खींचते हुए प्रियंका गांधी ने सरकार पर विभाजनकारी नीतियां अपनाने का जहां आरोप लगाया वहीं उन्होंने भाईचारे को तोड़ने जैसे कार्य किए जाने का भी उल्लेख किया। उन्होंने संविधान की एहमियत को रेखांकित किया और संविधान को देश का सुरक्षा कवच बताया। संविधान सिर्फ एक दस्तावेज नहीं, बल्कि न्याय, अभिव्यक्ति और आकांक्षा की ज्योत है। यह संविधान ही है जिसने हर भारतीय को अपनी आवाज उठाने और सरकार को जवाबदेह बनाने का अधिकार दिया है। लेकिन, आज की सरकार इन अधिकारों को कमजोर करने का प्रयास कर रही है। प्रियंका इसका उदाहरण देती हुई कहती हैं कि सरकार निजीकरण और लेटरल एंट्री के जरिए आरक्षण को खत्म करने की कोशिश कर रही है। भाषण में तीखापन लाते हुए वो कह जाती हैं कि प्रधानमंत्री संविधान को माथे से लगाते हैं, लेकिन जब मणिपुर और संभल में न्याय की गुहार उठती है, तो उनके माथे पर शिकन तक नहीं आती। देश के विभिन्न हिस्सों में जारी हिंसा पर सरकार की निष्क्रियता को लेकर सभी मंचों से आवाज उठती रही है और लगातार सरकार को घेरा जाता रहा है, लेकिन प्रियंका ने जिस तरह से इस बात को रखा उसकी चर्चा भी हो रही है। वो कहती हैं कि संविधान ने हमें एकता दी है, लेकिन आज इसे कमजोर किया जा रहा है। वाकई संविधान तो विभिन्नता में एकता का सूत्र देता है, जिस कारण दुनियां में देश की अलग पहचान बनती है और विकास की गाथा इसी आधार पर लिखी जाती है, जिसकी चर्चा पड़ोसी देश भी करते देखे जाते हैं। देश में मौजूद समस्याओं को जिस अंदाज में उठाया गया है, वह भी उल्लेखनीय हो गया है। प्रियंका गांधी ने किसानों और मजदूरों की समस्याओं पर सरकार की नीतियों को जिम्मेदार ठहराया। उनका कहना था कि कृषि कानून उद्योगपतियों के लिए बनाए जा रहे हैं। हिमाचल में सेब के किसान रो रहे हैं। वायनाड से लेकर ललितपुर तक किसान परेशान हैं। इसके साथ ही उन्होंने बेरोजगारी और महंगाई से जूझ रही जनता का सवाल रखा और बताया कि सरकार कोई राहत नहीं दे रही है। इन सभी के साथ मौजूदा सरकार ने जिस तरह से देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु को मौजूदा परेशानियों और समस्याओं का जिम्मेदार ठहराने वाला तकियाकलाम अपना रखा है, उसका भी प्रियंका ने वाजिब सवालिया जवाब दे दिया है। इस प्रकार प्रियंका ने अपने पहले भाषण में जहां संविधान के महत्व को रेखांकित किया वहीं उन्होंने देश की ज्वलंत समस्याओं से भी अवगत कराते हुए सरकार को उसकी अपनी जिम्मेदारी याद दिलाने का भी बेहतर काम कर दिखाया है। अब देखना यह होगा कि इस चर्चा के बाद सरकार अपने फैसलों और नितियों के साथ कार्यों के जरिए किस तरह से जवाब देती है। आखिर जिसके हाथों में देश की दशा और दिशा की तय करने की शक्ति है, उससे बेहतर परिणाम की आशा तो रखनी ही चाहिए।

दिल्ली की चुनावी जंग में कौन सत्ता का ताज पहनेगा?

ललित गर्ग

दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों के लिए फरवरी 2025 या उससे पहले चुनाव होने की संभावनाओं को देखते हुए राजनीतिक हलचलें एवं सरगर्मियां उग्र हो गयी है। इस बार के चुनाव में आम आदमी पार्टी लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटने की तैयारी में जुट गई है। वहीं, भाजपा और कांग्रेस इस बार सत्ता में वापसी की तैयारी में जुटी है। भाजपा दिल्ली विधानसभा चुनाव दूसरे प्रांतों की ही भांति बिना किसी मुख्यमंत्री चेहरे के लड़ने का मन बना चुकी है और केंद्र सरकार की योजनाओं को जनता के बीच रखेगी। पार्टी का मानना है कि लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व से प्रभावित हो सकते हैं। दिल्ली में भाजपा के पास एक से एक मजबूत नेता हैं, लेकिन इनमें से कोई भी नेता मुख्यमंत्री के रूप में पार्टी के लिए पेश नहीं किया जा रहा है। भाजपा दिल्ली में अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए नए तरीके से चुनावी तैयारियों में जुट चुकी है, वही कांग्रेस अपनी खोयी जमीन को हासिल करने के लिये जद्दोजहद करती हुई दिखाई दे रही है। निश्चित ही इस बार का दिल्ली चुनाव आक्रामक एवं संघर्षपूर्ण त्रिकोणात्मक होगा। आप, कांग्रेस एवं भाजपा की चुनावी जंग में कौन सत्ता का ताज पहनेगा, यह भविष्य के गर्भ है। दिल्ली में भाजपा के लिए यह चुनाव चुनौतीपूर्ण होने के साथ संघर्षपूर्ण भी है। 2015 और 2020 के विधानसभा चुनावों में, जहां पार्टी को शानदार प्रदर्शन की उम्मीद थी, उसे आम आदमी पार्टी से हार का सामना करना पड़ा। तब भाजपा को दिल्ली में मुख्यमंत्री का चेहरा प्रस्तुत करने से कोई बड़ा लाभ नहीं हुआ। इसके बजाए, भाजपा अब चुनावी रणनीतियों में बदलाव कर रही है और अपनी शक्ति को पार्टी संगठन और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उनकी लोककल्याणकारी योजनाओं के बल पर मजबूत करने का प्रयास कर रही है। यही कारण है कि दिल्ली भाजपा आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में केंद्र सरकार के काम और योजनाओं को जनता के बीच रखेगी। पार्टी के रणनीतिकारों का मानना है कि दिल्ली के लोग इससे ज्यादा प्रभावित हो सकते हैं, खासकर जब बात विकास, सुरक्षा, चिकित्सा और शिक्षा जैसे मुद्दों की हो। अगर भाजपा बिना किसी प्रमुख चेहरे के चुनाव लड़ती है तो यह असमंजस की स्थिति बनने की संभावनाएं तो पैदा कर ही सकती हैं। दूसरी ओर, यह फैसला एक रणनीतिक कदम हो सकता है, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी की प्रतिष्ठा का इस्तेमाल करके अन्य प्रांतों की भांति दिल्ली में भी चमत्कार घटित हो सकता है। भाजपा ने यह भी तय किया है कि दिल्ली की जनता को बताया जाएगा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उनके साथ वादाखिलाफी की है, वे बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और सड़कों की स्थिति में सुधार का वादा करके उन्हें जर्जर करते रहे हैं। भाजपा का मानना है कि मोदी सरकार की योजनाएं देशभर में सफलता प्राप्त कर रही हैं और इन्हें दिल्ली में लागू किया जाएगा। भाजपा को दिल्ली में हमेशा मिडिल और हाई मिडिल क्लास के लोगों की पार्टी माना जाता है। इसमें व्यापारिक समुदाय इसके कट्टर समर्थक हैं। लेकिन इस बार निचले तबको एवं गरीब लोगों के बीच उसे प्रभावी प्रयास करने होंगे। यह तो दिखता हुआ सच है कि दिल्ली में आप शासन में विकास अवरूद्ध हुआ है, पर्यावरण की समस्या उग्रतर हुई है, आप नेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे एवं उनके नेता जेल यात्राएं की है। ऐसे अनेक गंभीर आरोपों के साथ भाजपा आप और उसके नेताओं पर आक्रमक होकर चुनावी परिदृश्यों को बदल सकती है। भाजपा ने कमर कस ली है और उसके नेता लगातार जनता के बीच जाकर बदलाव की अपील कर रहे है। इसके तहत इन दिनों जहां परिवर्तन सभाओं का आयोजन किया जा रहा है, वहीं अगले हफ्ते से पूरी दिल्ली में परिवर्तन यात्राएं भी निकाली जाएंगी। इन यात्राओं के माध्यम से आम मतदाताओं से निजी तौर पर मिलते हुए, उनसे बात करते हुए उनको पार्टी के साथ जोड़ा जायेगा। उनके दुःख-दर्द को सुना जायेगा। भाजपा का इतिहास रहा है कि वह आम जन तक पहुंचने के लिए ऐसी यात्राएं निकालती रही है एवं व्यक्तिगत संवाद स्थापित करती रही है। भाजपा नेता सतीश उपाध्याय ने कहा कि दिल्ली में एक भ्रष्ट सरकार चल रही है लेकिन अब तो रंगदारी, वसूली, फिरौती और आम नागरिकों के बीच डर पैदा करने की भी कोशिश की जा रही है। इसके चलते दिल्ली की जनता अब सत्ता परिवर्तन के मूड में है और देशविरोधी मानसिकता वाली सरकार को इस बार विधानसभा से उखाड़ फेंकने का मन बना चुकी है। देखना है कि भाजपा के इन आरोपों का जनता पर कितना असर होता है। निश्चित ही दिल्ली में आम आदमी पार्टी की जमीन अभी भी मजबूत है। इसीलिये 2025 के चुनाव कांग्रेस एवं भाजपा के लिये चुनौतीपूर्ण होने वाले है। 2020 में हुआ विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने 62 सीटें जीती थीं। वहीं भाजपा को महज 8 सीटों पर जीत मिली थी। कांग्रेस का लगातार दूसरी बार दिल्ली से सफाया हो गया था। इस बार के चुनाव से पहले अरविंद केजरीवाल ने अपने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। उसके बाद आतिशी मालेर्ना राज्य की मुख्यमंत्री बनी हैं। आप नेताओं ने चुनाव अभियान प्रारंभ कर दिया है। दिल्ली में आगामी विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस के साथ गठबंधन न करने का फैसला किया है। आप ने पिछले दो विधानसभा चुनावों में भारी अंतर से जीत हासिल की है। आप के आंतरिक सर्वेक्षण बताते हैं कि आप इस चुनाव में भी आसानी से जीत की ओर बढ़ रही हैं। इन स्थितियों में आप क्यों कांग्रेस या अन्य पार्टी के साथ गठबंधन करें? आप अभी भी निम्न-मध्यम वर्ग और झुग्गी-झोपड़ियों वाले इलाकों में काफी लोकप्रिय है। आप का वोट शेयर पहले की तुलना में बढ़ा है और कांग्रेस कमजोर हुई है। हालांकि, 2013 में अपने पहले चुनाव के बाद से आप का वोट शेयर लगातार बढ़ता रहा। जबकि पिछले दशक में कांग्रेस को वोट देने वालों की संख्या में काफी कमी आई है। आप ने 2013 में अपने आश्चर्यजनक प्रदर्शन के साथ, कुल मतदान का 29 प्रतिशत वोट प्राप्त किया था। पार्टी को 70 में से 28 सीटों पर जीत मिली थी। आप ने कांग्रेस के वोट बैंक में सेंध लगाई थी। इससे कांग्रेस का वोट शेयर घटकर 24.5 प्रतिशत और सिर्फ आठ सीटों के साथ तीसरे स्थान पर आ गई थी। इसके बाद 2015 और 2020 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस का वोट शेयर क्रमशः 9.7 प्रतिशत और 4.3 प्रतिशत तक गिर गया। वहीं, आप ने 54.6 प्रतिशत और 53.6 प्रतिशत वोट शेयर के साथ भारी जनादेश हासिल किया। लेकिन इस बार विधानसभा चुनाव में कांग्रेस एवं आप के बीच गठबंधन न होने का फायदा भाजपा को मिलता हुआ दिख रहा है। असल में आप के वोट कांग्रेस ही काटेगी।

आज का मुद्दा समाचार पत्र का प्रत्येक अंक मां गंगा और सिद्ध पीठ बाबा बालक नाथ मंदिर सेक्टर 62 नोएडा के चरणों में समर्पित : स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक मनोज वत्स द्वारा वत्स ऑफसेट मुद्दा हाउस सी ब्लॉक बरात घर चौड़ा रघुनाथपुर सेक्टर 22 नोएडा गौतम बुध नगर उत्तर प्रदेश से मुद्रित करा कर मुद्दा हाउस सी ब्लॉक बरात घर चौड़ा रघुनाथपुर सेक्टर 22 नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित किया मुख्य संपादक के.जी.शर्मा **RNI.NO.UPHIN/2011/37197**, 9310549614
किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।

कांग्रेसी 18 दिसंबर को करेंगे लखनऊ विधानसभा का घेराव

प्रदेश सरकार की जन विरोधी नीतियो के खिलाफ भरेंगे हुंकार- दुक्की मल खटीक

आज का मुद्दा

हापुड़। जनपद हापुड़ के एससीएसटी कांग्रेस विभाग के जिलाध्यक्ष नरेश कुमार भाटीके नवी करीम स्थित कांग्रेस कार्यालय पर शनिवार को एक बैठक हुई। जहांकांग्रेस जनों ने 18 दिसंबर को विधानसभा घेराव के लिए एक प्रेस वार्ता काआयोजन किया। प्रेस वार्ता में पहुंचे पत्रकारों को संबोधित करते हुए प्रदेशमहासचिव व जिला प्रभारी दुक्की मल खटीक ने कहा कि 18 दिसंबर को जनपदहापुड़ से कांग्रेस जन लखनऊ विधानसभा का घेराव करने के लिए पहुंचेंगे। इसकेलिए जिला व शहर कांग्रेस कमेटी की ओर से विधानसभा के घेराव हेतु रणनीतितैयार की गई है। उन्होंने कहा कि जनपद हापुड़ से भारी मात्रा में कांग्रेसजन लखनऊ में प्रदेश सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ अपनी हुंकारभरेंगे। जिलाध्यक्ष मिथुन त्यागी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार कीनीतियां जन विरोधी है जिसके विरोध में कांग्रेस जन लखनऊ में सरकार के खिलाफअपना विरोध प्रदर्शन करेंगे। शहर कांग्रेस अध्यक्ष अभिषेक गोयल ने कहा किउत्तर प्रदेश में किसान, नौजवान, महिलाएं, गरीब, शोषित, वंचित और समाज केहर तबके का व्यक्ति अपने आप को ठगा हुआ महसूस कर रहा हैं। जिसके लिए

आजयूपी की के हर जनपद में प्रेस वार्ता का आगमन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजयराय के आह्वान पर की जा रही है। उन्होंने कहा कि हापुड़ शहर से काफी संख्यामें कांग्रेस जन लखनऊ में विधानसभा का घेराव कर सरकार की जन विरोधीनीतियों के खिलाफ अपनी हुंकार भरेंगे। इस दौरान वरिष्ठ कांग्रेसीनेता अरविंद शर्मा, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष सुशील शर्मा, विक्कीशर्मा, मनोज कौशिक, गौरव गर्ग, निसार खान, भरतलाल शर्मा, यशपाल सिंह, सुखपाल गौतम, देवेंद्र कुमार, विनोद कर्दम, जस्सा सिंह, यश कुमार, सुबोधशास्त्री, शौकीन चौधरी सहित कांग्रेस के कई पदाधिकारी गण मौजूद रहे।

सिकंदराबाद विधायक ने जनता दरबार में सुनी लोगों की जन समस्याएंः संबंधित अधिकारियों को दिए दिशा निर्देश

सोनू सैनी (सिकंदराबाद)

सिकंदराबाद में शनिवार को विधायक लक्ष्मीराज सिंह ने जनता दरबार लगाकर लोगों की जन समस्याएं सुनकर संबंधित विभाग के अधिकारियों को फोन अथवा पत्र लिखकर निस्तारण का निर्देश दिया।

उन्होंने शासन स्तर पर संचालित योजनाओं का आम जनता को अधिक से अधिक लाभ देने को भी कहा। शनिवार को विधायक लक्ष्मीराज सिंह ने एसडीएम कालोनी स्थित अपने आवास पर लगाकर आमजन की समस्याओं को सुना। शिकायतों का निस्तारण करने के लिए विधायक ने संबंधित विभाग के अधिकारी को फोन करके समस्या का निस्तारण करने अथवा पत्र लिखकर जल्द ही निस्तारण करने का निर्देश दिया। विधायक लक्ष्मीराज सिंह ने कार्यकताओं से आह्वान किया कि व सरकारी स्तर पर संचालित योजनाओं को आम जनता को अधिक से अधिक लाभ दिलाने में सहभागिता करे।

इस मौके पर गौरव भाटिया, अरुण प्रजापति, अनूप भाटी, तरसेराम गुर्जर,संदीप तेवतिया, सुभाष भाटी ,प्रदीप बोडा, पुष्पेन्द्र मावी, यशवीर भाटी आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संधिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत

बुलंदशहर : स्याना कोतवाली क्षेत्र के गांव बरौली वासुदेवपुर में संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत हो गई। महिला की मौत की सूचना पर परिजनों में हाहाकार मच गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस जांच में जुट गई। पुलिस ने मृतका के शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जानकारी के अनुसार कोतवाली नगर क्षेत्र के ग्राम वहलीम पुरा निवासी करन की वहन काजल उम्र करीब 26 की शादी स्याना कोतवाली क्षेत्र के बरौली वासुदेवपुर निवासी अजीत साथ हुई थी। आरोप है कि ससुरालियों ने दहेज की मांग को लेकर विवाहिता की फांसी का फंदा लगाकर हत्या कर दी।

मृतका के भाई ने अपने बहनोई ,उसके ब भाई व पिता पर दहेज की मांग को लेकर बहन की हत्या करने का आरोप लगाते हुए तहरीर दी। एसएसआई छैल बिहारी शर्मा ने बताया कि मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की गई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मामले का पता चल सकेगा।

दहेज की खातिर विवाहिता की हत्या का आरोप

मृतका के भाई ने दहेज लोभी ससुरालियों के खिलाफ शिकायती पत्र देकर मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर बारीकी से पड़ताल की। विवाहिता की मौत के बाद सूचना मिलते ही परिजनों में हाहाकार मच गया। भारी भीड़ मौके पर एकत्रित हो गई। परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

फंदे पर लटकी मिली थी विवाहिता

विवाहित का शव फांसी के फंदे पर लटका हुआ मिला था। विवाहित का शव लटका देख परिजनों की चीख पुकार सुन मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही चौकी इंचार्ज महक सिंह बालियान पुलिस पर लेकर मौके पर पहुंच गए। चौकी इंचार्ज ने बताया कि पुलिस ने मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस बारीकी से पड़ताल कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मामले का खुलासा हो सकेगा।

समाधान दिवस पर एसपी ने सुनी समस्याए

आज का मुद्दा-हापुड़। जनपद हापुड़ में शनिवार को थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया जहांसंबंधित को जरूरी निर्देश दिए। हापुड़ के पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंज्यसिंह ने गढ़मुक्तेश्वर थाने पर लोगों की फरियाद सुन समस्याओं का निस्तारणकरने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। इस दौरान गुणवत्ता के साथनिस्तारण का आदेश कप्तान ने संबंधित को दिया। वहीं बाबूगढ़ थाने में भीफरियादियों की फरियाद सुनी गई जहां एडीएम संदीप कुमार, अंडर ट्रेनिंग सीओराहुल यादव, नायब तहसीलदार नितिन कुमार ने लोगों की समस्याएं सुनी। इसी केसाथ जनपद के अन्य थानों में भी थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया जहां आएहुए फरियादियों की फरियाद को सुन आवश्यक कदम उठाए।

भाजपा प्रदेश सह चुनाव अधिकारी ने जनपद में चल रही मण्डल अध्यक्ष प्रक्रिया का किया अवलोकन

आज का मुद्दा-हापुड़। हापुड़ की दिल्ली रोड पर स्थित प्रीत विहार में भाजपा के जिला कार्यालय परशनिवार को एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें प्रदेश सह चुनाव अधिकारी अनिल चौधरीने जिला सह चुनाव अधिकारी, मण्डल चुनाव अधिकारी, जिलाध्यक्ष भाजपा के साथजनपद में चल रही मण्डल अध्यक्ष प्रक्रिया का अवलोकन किया व आगामी कार्यक्रमहेतु बताया कि मण्डल अध्यक्ष प्रक्रिया में सभी जनप्रतिनिधि, वरिष्ठनेतागण, मण्डल में निवास करने वाले क्षेत्र व प्रदेश के पदाधिकारी पूर्वजिलाध्यक्ष पूर्व विधायक पूर्व सांसद के परामर्श के पश्चात जिला चुनावअधिकारी द्वारा पैनल तैयार कर प्रदेश भेजा जायेगा। उस पैनल के माध्यम सेआगामी दिनों में मण्डल अध्यक्ष जिला प्रतिनिधि, घोषित किये जायेगें। अगरकिसी मण्डल में एक ही नामकंन हुआ है। उसका नाम भी पैनल के माध्यम से जिलाचुनाव अधिकारी प्रदेश भेजेगें। प्रदेश की सहमति के पश्चात ही घोषित कियेजायेगें।

मारपीट की घटना में संलिप्त 07 गिरफ्तार

आज का मुद्दा-हापुड़। थाना कपूरपुर पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए थाना क्षेत्रान्तर्गत ग्राम सपनावत में हुए मारपीट की घटना में संलिप्त 07 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है, जिनके कब्जे से घटना में प्रयुक्त लाठी-डंडे व ईंट-पत्थर बरामद किये गए है। जानकारी के अनुसार हापुड़ पुलिस द्वारा जनपद मं अपराध की रोकथाम एवं वांछित अभियुक्तो की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत थाना कपूरपुर पुलिस ने थाना क्षेत्रान्तर्गत ग्राम सपनावत में हुए झगड़े व मारपीट की घटना में संलिप्त 07 अभियुक्तो को ग्राम सपनावत से गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार अभियुक्तगण गोपाल पुत्र भगवत, मोहित पुत्र राकेश, जयकिशन पुत्र प्रमोद, पंकज पुत्र विजेंद्र, दीपक पुत्र गजेंद्र, सिकन्दर पुत्र लक्ष्मण सिंह, मनोज पुत्र गजेंद्र निवासी ग्राम सपनावत थाना कपूरपुर जनपद हापुड़ है। पुलिस ने बताया कि मारपीट की घटना में संलिप्त 07 अभियुक्तो को गिरफ्तार किया गया है।

महालक्ष्मी इलेक्ट्रॉनिक शोरूम में हुई चोरी का पुलिस ने किया खुलासाः 17 मोबाइल बरामद, दो चोर गिरफ्तार

सोनू सैनी (सिकंदराबाद)

सिकंदराबाद कोतवाली नगर में 6 दिन पूर्व महालक्ष्मी इलेक्ट्रिक शोरूम में हुई चोरी का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने चोरों की निशान दही से 17 मोबाइल बरामद किये है तथा दो चोरों को गिरफ्तार किया है। एक आरोपी फरार चल रहा है। पुलिस फरार चल रहे चोर की तलाश में पुलिस दविश दे रही है। पुलिस ने चोरों से पूछताछ के बाद उन्हे जेल भेज दिया है।

एसपी सिटी शंकर प्रसाद ने बताया कि 6 दिन पूर्व नगर के महालक्ष्मी इलेक्ट्रॉनिक शोरूम में चोरी की वारदात को अंजाम दिया। चोर छत के रास्ते शोरूम में घुसे और करीब 20 लाख के मोबाइल चोरी कर साथ ले गए थे। वही पकड़े गए चोरों में मुस्तकीम पुत्र मुस्ताक निवासी कास्यथवाडा, दूसरा आसिफ गिरफ्तार क्या है वहीं तीसरा आरोपी फरार चल रहा है जल्द ही तीसरे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। तरुण गर्ग ने बताया कि नगर के बलदेव मंदिर के सामने उनकी महालक्ष्मी इलेक्ट्रॉनिक शोरूम है। वह रोजाना की भांति वह रविवार की देर शाम शोरूम बंद कर अपने घर चले गए थे। आज सुबह 9:00 बजे शोरूम खोला तो उनके होश उड़ गए। मोबाइल काउंटर से लाखों रुपए के मोबाइल गायब थे। उन्होंने पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंचे कोतवाली प्रभारी रवि रतन सिंह ने पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच कर जांच पड़ताल की। वहीं, पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। उधर पीड़ित ने बताया कि शातिर चोर छत के रास्ते शोरूम के अंदर घुसकर घटना को अंजाम दिया है। पीड़ित दुकानदार तरुण गर्ग ने बताया कि उन्होंने बताया कि दुकान से लाखों रुपए के मोबाइल चोरों ने हाथ साफ किया था। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर आर देकर चोरी की घटना के खुलासे की मांग की थी।

राष्ट्रीय लोक अदालत का सफल आयोजन

हापुड़। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं उ०प्र० राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के तत्वाधान में दिनांक 14.12.2024 को मलखान सिंह, जनपद न्यायाधीश, हापुड़ द्वारा राष्ट्रीय लोक अदालत का उद्घाटन फीता काटकर, दीप प्रज्वलित कर, माँ सरस्वती की प्रतिमा का पुष्पार्चन तथा माल्यार्पण कर किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में गुरप्रीत सिंह बावा पीठासीन अधिकारी मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, हापुड़, विपिन कुमार,अपर जिला जज-प्रथम, हापुड़ हनी गोयलनोडल अधिकारी, राष्ट्रीय लोक अदालत, डा० ब्रह्मपाल सिंह,मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, हापुड़, उमाकान्त जिंदल,अपर जिला जज विशेष न्यायाधीश (पोक्सो अधिनियम),प्रथम, हापुड़, अपर जिला जज द्वितीय ग्यानेन्द्र सिंह यादव, अपर जिला जज त्वरित न्यायालय प्रथम, हापुड़, मिताली गोविंद राव, अपर जिला जज त्वरित न्यायालय द्वितीय, विरेश चन्द्रा व संजय कंसल, अध्यक्ष बार एसोसिएशन, हापुड़ तथा समस्त न्यायालय के पीठासीन न्यायिक अधिकारीगण, विद्वान अधिवक्तागण, न्यायिक कर्मचारीगण, बैंक के अधिकारीगण तथा वादकारीगण उपस्थित रहें।इस संबंध में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, हापुड़ डा० ब्रह्मपाल सिंह द्वारा जानकारी दी गयी कि राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से विभिन्न न्यायालयों द्वारा4919/- वादों का निस्तारण किया गया। लोक अदालत में जिला जज मलखान सिंह द्वारा 8 वादों का निस्तारण किया गया, जिसमें मु०10900/- रू० का अर्थदण्ड वसूल किया गया। प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय, हापुड़ डॉ० विदुषी सिंह द्वारा 73 वादों का निस्तारण किया गया, जिनमें से 15 जोड़ों को सुखमय जीवन व्यतीत करने हेतु न्यायालय कक्ष से विदा किया गया। पीठासीन अधिकारी मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, हापुड़ गुरप्रीत सिंह बावा द्वारा 53 वादों का निस्तारण किया गया, जिसमें मु० 1,60,100,00/- रुपए का सेटलमेंट किया गया। अपर जिला जज प्रथम, हापुड विपिन कुमार द्वितीय द्वारा 267 वादों का निस्तारण किया गया एवं 1500/- रु० का सेटलमेंट किया गया। अपर जिला जज विशेष (एससी/एसटी)अधिनियम, हनी गोयल, द्वारा 08 वादों का निस्तारण किया गया। अपर जिला जज विशेष पोक्सो अधिनियम, हापुड, उमाकान्त जिन्दल द्वारा 12 वादों का निस्तारण किया गया एवं 45000/- रु० का अर्थदण्ड वसूल किया गया। जनपद के राजस्व, पुलिस एवं अन्य विभागों द्वारा संयुक्त रूप से विभिन्न प्रकार के 130610 मामलों का निस्तारण किया गया। इस प्रकार जनपद में कुल 135529 मामलों का निस्तारण कर अंकन 80158713/- रुपए(आठ करोड़ एक लाख अठावन हजार सात सौ तेरह मात्र) का सैटिलमेंन्ट किया गया।मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, डा० ब्रह्मपाल सिंह ने लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए समस्त न्यायिक अधिकारीगण, प्रशासनिक, पुलिस व बैंक अधिकारीगण एवं समस्त कर्मचारीगण का आभार व्यक्त किया।

बदमाश सोनू मटका एनकाउंटर में ढेर, दिल्ली में डबल मर्डर केस में था वॉन्टेड

आज का मुद्दा-(के०जी० शर्मा) नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने बड़ी कामयाबी हासिल की है। पुलिस ने दिल्ली में दोहरे हत्याकांड का वांछित और 50,000 के इनामी बदमाश को मुठभेड़ में मार गिराया है। अनिल उर्फ सोनू मटका ने कुछ दिन पहले एक कारोबारी को सरेआम मार डाला था। शनिवार की सुबह यूपी स्पेशल टास्क फोर्स और दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल के साथ संयुक्त ऑपरेशन में दिल्ली में दोहरे हत्याकांड का वांछित और 50,000 रुपये का इनामी बदमाश सोनू मटका मेरठ जिले के टीपी नगर थाने में मुठभेड़ के दौरान घायल हो गया। उसे तुरंत इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। दिल्ली पुलिस के अनुसार, वह हाशिम बाबा गैंग का कुख्यात शूटर था। उसके खिलाफ यूपी और दिल्ली में लूट और हत्या के आधा दर्जन मामले दर्ज हैं।

राज्यपाल आनंदी बेन पटेल को ही भेज दिया नोटिस, हकीकत ने उड़ाए अधिकारियों के होश

(के०जी० शर्मा) लखनऊ। राजधानी लखनऊ में वरासत के एक मुकदमे में शरारती युवक ने राज्यपाल को पक्षकार बनाते हुए फर्जी तरीके से नोटिस राजभवन भेज दिया। मामला तब सामने आया जब फाइल राजभवन से कलेक्ट्रेट पहुंची। राज्यपाल ने नाराजगी जताते हुए कार्रवाई का निर्देश दिया तो हड़कंप मच गया। तहसील मलिहाबाद में मीरा पाल बनाम ग्राम सभा का वरासत का मुकदमा तहसीलदार के न्यायालय में विचाराधीन है। किसी शरारती व्यक्ति ने 11 नवंबर को राज्यपाल को पार्टी बनाते हुए राजभवन को नोटिस भेज दिया। तहसीलदार विकास सिंह के मुताबिक शरारती व्यक्ति ने सामान्य नोटिस बनाकर न्यायालय की मोहर व तहसीलदार के पेशकार के फर्जी हस्ताक्षर बनाकर 29 अक्तूबर को जारी होने की तिथि व आठ नवंबर को पेशी की तिथि लिखकर 11 नवंबर को लखनऊ से राजभवन के लिए स्पीड पोस्ट किया था। जबकि वरासत के मुकदमे में राज्यपाल पक्षकार ही नहीं होते है।

एसएसपी बुलन्दशहर द्वारा थाना कोतवाली नगर का अर्दली रूम कर संबंधित को दिए आवश्यक दिशा निर्देश

आज का मुद्दा (आशीष कुमार) बुलंदशहर शनिवार को एसएसपी बुलन्दशहर श्लोक कुमार द्वारा थाना कोतवाली नगर के समस्त विवेचको का अर्दली रूम किया गया, जिसमें थाने के अभिलेखों का बारीकी से अवलोकन किया गया। जिसमें विवेचकों को विवेचनाओं का गुणवत्तापूर्ण शीघ्रता से निस्तारण, वांछित एवं एनबीडब्लू की गिरफ्तारी के साथ-साथ समय से आरोप पत्र प्रेषित कर प्रभावी पैरवी कर सजा के अन्तिम परिणाम तक पहुँचाने तथा 07 वर्ष के कम अवधि की सजा वाली धाराओं की विवेचनाओं का निस्तारण एक सप्ताह के अन्दर करने व महिला सम्बन्धी अपराधों में न्यूनतम समय में विवेचनाओं का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कर सजा दिलवाने व प्रदेश भर में चलाये जा रहे अभियान "ऑपरेशन कन्विक्शन" के क्रम में अपराधियों को सजा दिलवाने में व्यक्तिगत रूचि लेकर प्रभावी पैरवी करने को भी निर्देशित किया गया। साथ ही आईजीआरएस प्रणाली के माध्यम से प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने तथा सम्बन्धित को लम्बित विवोचनाओं का शत-प्रतिशत शीघ्रतम विधिक निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया गया। इस मौके पर सहायक पुलिस अधीक्षक नगर ऋजुल, थाना प्रभारी कोतवाली नगर, सलेमपुर, पहासू व अहमदगढ भी मौजूद रहें।

अपर पुलिस अधीक्षक अपराध द्वारा पुलिस लाइन सभागार में 10 साला अपराधियों के सत्यापन के सम्बन्ध में गोष्ठी की गयी

आज का मुद्दा आशीष कुमार बुलंदशहर : शनिवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बुलन्दशहर के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक अपराध द्वारा जनपद के सभी थानों पर नियुक्त कम्प्यूटर ऑपरेटर व सीसीटीएनएस पर नियुक्त कर्मचारियों के साथ जनपद में रहने वाले व जनपद के बाहर रहने वाले 10 साला अपराधी जिसमें डकैत, लुटेरे, चोर, नकबजन, पशुचोर, एटीएम चोर, ट्रांस्फार्मर चोर, गैंगस्टर व गौकश के सत्यापन के सम्बन्ध में गोष्ठी की गयी। जिसमें सभी कर्मचारियों को अपराधियों के सत्यापन के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये तथा त्रिनेत्र ऐप पर अभियुक्तों की सही-सही जानकारी अंकित कराने हेतु निर्देशित किया गया।

पॉलिथीन के गोदाम में लगी भीषण आग, 03 लाख का नुकसान

हापुड़। जनपद हापुड़ के थाना धौलाना क्षेत्र की मसूरी मार्ग परस्थित पॉलिथीन के गोदाम में अज्ञात कारणों से शनिवार की सुबह करीब 11:30 बजे आग लग गई। आग इतनी भयंकर थी कि गोदाम से उठने वाली लपटे व धुआं दूर सेही देखा जा सकता था। पहले तो मौके पर मौजूद लोगों ने अग्निशमन यंत्रों सेआग पर काबू पाने का प्रयास किया लेकिन जब आग अनियंत्रित हो गई तो उसके बाददमकल विभाग को मामले से अवगत कराया। सूचना पर दमकल विभाग की टीम मौके परपहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। गोदाम पर मौजूद आकाश नेबताया कि इस दौरान करीब तीन लाख रुपए का नुकसान हो गया। जानकारी के अनुसार धौलाना की मसूरी मार्ग पर पॉलिथीन का गोदाम है जहांपिन्नी जलाने का काम होता है। अज्ञात कारणों से शनिवार की सुबह अचानक आग लगगई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। इसके बाद दमकल की टीममौके पर पहुंची और समय रहते आग पर काबू पाया।

बलिदानियों की धरती चित्तौड़गढ़

बलिदान की उन सैंकड़ों कहानियों का गवाह रहा हूं, जिन पर वर्तमान को मुझपर अभिमान है.कभी लहू देकर मेरा सम्मान किया गया.तो कभी उन जलती चिता को देखकर मैंने आंसू बहाए.जो मेरी बेटी थी.जो मेरा बेटा था.मेरी धरती पर उन बेटों ने जन्म लिया है.उन बेटियों ने जन्म लिया है, जिनपर आज भी मुझे गर्व है.आज मैं अपनी कहानी सुना रहा हूं.मैं चित्तौड़गढ़ हूं.आज मैं अपने इतिहास. वीरतापूर्ण लड़ाइयों.राजपूत शूरता. महिलाओं के अद्वितीय साहस की कई और कहानियां सुना रहा हूं. दुनिया में वीरता, बलिदान, त्याग, साहस के न जाने कितने किरदार आपने देखे होंगे और सुने होंगे.पर मुझे नाज है कि हिंदुस्तान की सरजमीं पर इतने सारे नायकों से भरी धरा कोई नही है.

मेरा इतिहास मेरी जुबानी

चित्तौड़ की इस पावन धरा ने तो अन्याय और अत्याचार के खिलाफ ही लड़ना जाना.हमें क्या पता ये सियासत क्या होती है.हिंदू-मुसलमान के नाम पर हमें मत बांटो.हमने अपने बेटों को कभी धर्म और संप्रदाय की आंखों से नहीं देखा. जब मुगल बाबर ने हमें आंखें दिखाई थी, तो खन्वा के युद्ध में मेरे बेटे राणा सांगा का साथ देने के लिए हसन खान चिश्ती और महमूद लोदी ही तो आए थे.जब अत्याचारी अहमद शाह हमें लूटने पहुंचा, तो हमारी राजमाता कर्णावती ने रक्षा के लिए अपने मुगल भाई हुमायूं को ही तो राखी भेजी थी.जब मेरे प्रतापी बेटे महाराणा प्रताप के खिलाफ सभी सगे संबंधी मुगल अकबर के साथ हो गए, तो प्रताप का सेनापति बनकर पठान योद्धा हाकम खान सूर ने ही युद्ध में बलिदान दिया.मुझे किसी करणी सेना के नाम पर किसी जाति में मत बांधो.जब खुद के एक मेरे नालायक बेटे बनबीर ने मेरे ऊपर अत्याचार किए, तो मेरे वारिस उदय सिंह को बचाने के लिए गुर्जर जाति की पन्नाधाय ने अपने बेटे चंदन का बलिदान कर मेरे वारिस को बचाया था. जब महराणा प्रताप की मदद किसी ने नहीं की, तो एक वैश्य ने सबकुछ बेचकर मेरी 12,000 सेनाओं का खर्च उठाया. जब राजपूत राजा हमारे लिए लड़ रहे प्रताप के खिलाफ अकबर से जा मिले, तो प्रताप की सेना में लड़ने के लिए घूमंतु आदिवासी गड़रिया लुहार ही साथ आए थे.जब अकबर ने हमला किया तो किसी रानी ने नहीं बल्कि फूलकंवर के नेतृत्व में मेरे गोद में चित्तौड़ की सभी महिलाओं ने आखिरी जौहर किया था.

पांचवी सदी में मौर्यवंश के शासक चित्तरांगन मौरी ने जब 7 मील यानी 13 किमी की लंबाई, 180 मी.ऊंचाई और 692 एकड़ में फैले इस पहाड़ी पर मुझे बसाया था.तब किसी को कहां पता था कि दुनिया का सबसे बुजुर्ग गढ़ मैं, यानी चित्तौड़गढ़, हिंदुस्तान की माटी का तिलक बन जाउंगा.मोरी वंश के अंतिम शासक मान सिंह मोरी के बाद मेरे पास 728 ईसवीं में गोहिल वंश के शासक आए.गोहिलों के शासन के बाद रावल वंश का शामन चला.कहते हैं गोहिलों ने दहेज में राजकुमारी को ये किला भेंट किया.रानी, राजकुमारी से रावल वंश के वंशज बप्पा रावल की शादी हुई थी. सातवीं से 13वीं सदी तक मेरे वैभव का काल था.जब हमारी सुचिता, वैभव और पराक्रम की कहानियां दूर-दूर तक कही जाने लगी.लेकिन चौदहवीं सदी से लेकर 16 वीं सदी तक हमने सबसे बुरा दौर देखा.जाने किसकी नजर हमारे चित्तौड़गढ़ पर लग गई और रावल वंश के शासक रतन सिंह के शासन के दौरान 1303 में अलाउद्दीन खिलजी ने मेरे उपर हमला कर दिया.हिंदुस्तान के सबसे सुरक्षित माना जाने वाला अभेद्य दुर्ग सबसे कमजोर भी हो सकता है ये खिलजी की युद्धनीति ने पहली बार सामने ला दिया.फिर यहीं से हम हमेशा के लिए कमजोर बनते चले गए.सात दरवाजों से घिरे मेरे अंदर सात विशाल दुर्ग दरवाजे हैं, जिसे कोई पार नही कर सकता.लेकिन 1303 में खिलजी ने जाड़े में चारो तरफ से मुझे घेरकर मैदान में डेरा डाल दिया.वो मेरे अंदर नहीं आ सकता था.लेकिन दुर्ग के अंदर हमारे राशन-पानी को बंद कर दिया.सात महीने में हम बेबस होकर युद्ध के लिए मैदान में आए और हमारे रावल रतन सिंह और उनके दो बहादुर सेनापति गोरा-बादल शहीद हुए.

हमारी रुपवती रानी पद्मिनी को 16000 रानियों के साथ जौहर करना पड़ा.ये पहली बार था, जब हमारी वीरता और साहस-बलिदान की अमर कहानी दुनिया ने देखी.कहते हैं अलाउद्दीन लंपट स्वभाव का था और पद्मिनी को पाने के लिए युद्ध किया था.लेकिन हिंदुस्तान की सबसे ताकतवर सेना के होते हुए भी वो हमारी महरानी को नही पा सका.रावलों के शासन का यहीं अंत हुआ.13 साल तक अलाउद्दीन खिलजी और उसके बेटे खेजर ने मेरे ऊपर राज किया.इस दौरान पूरे महल को तोड़ दिया गया और 1000 हजार से भी ज्यादा मंदिर भी तोड़ दिए.ये हमारे ऊपर हुए अत्याचार की इंतहा थी.लेकिन हमने उम्मीद नहीं छोड़ी थी.उसके बाद गोहिल वंश के ही भाई राणा वंश के सिसोदियाओं ने हमारे ऊपर राज किया.1325 में राणा हमीर ने इसे अपना किला बनाया और राणा वंश यानी सिसोदिया वंश का शासन चलना शुरु हुआ.और आखिरी तक मेरे ऊपर सिसोदिया वंश का ही शासन रहा. मेरे उपर सबसे ज्यादा सिसोदिया वंश ने ही राज्य किया.और इस वंश में कई प्रतापी राजा हुए.राजा रतन सिंह से लेकर महराणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ पर शासन किया.महाराणा सांगा.महाराणा कुंभा भी चित्तौड़गढ़ के महान राजाओं में से एक हुए.इन राजाओं ने चित्तौड़गढ़ को एक अलग पहचान दिलवाई.मैं यानी चित्तौड़गढ़ किला अभेद्य था.पहाड़ी के किनारे-किनारे खड़े चट्टानों की पंक्ति थी.साथ ही साथ दुर्ग में अंदर जाने के लिए लगातार सात दरवाजे बनाए गये थे. लिहाजा, दुश्मनों के लिए किले के अंदर जाना नामुमकिन था.लेकिन, विशाल मैदान के बीच में पहाड़ी पर ये किला बना था.जिसकी वजह से दुश्मन विशाल मैदान में डेरा डाल देते थे.और किले के अंदर खाने की सप्लाई रोक देते थे. नतीजा किले के दरवाजों को खोलने के लिए राजाओं को विवश होना पड़ता था. और शत्रुओं की विशाल सेना होने की वजह से उन्हें हार का मुंह देखना पड़ता था.

रानी कर्णावती

रामी पद्मावती की कहानी तो आपने सुनी लेकिन राणा सांगा की पत्नी कर्णावती का भी बलिदान भी हमारे गर्भ में छिपा है.जब गुजरात के शासक अहमद शाह ने 1535 ईवी में चित्तौड़ पर हमला किया, तब बाबर के साथ खानवा के युद्ध में घायल राणा सांगा की मौत हो चुकी थी.राणा सांगा के पुत्र विक्रमादित्य के व्यवहार से परेशान किसी राजा ने हमारी मदद नहीं की.तो कर्णावती ने हूमायूं को राखी भेजते हुए लूटेरे अहमद शाह के खिलाफ मदद मांगी.हूमायूं को कर्णावती का संदेशा देर से मिला और मदद करने वो नहीं आ पाया.दो साल की लड़ाई के बाद अहमद शाह की जीत हुई तो 1537 ईवी में हजारों रानियों के साथ एक बार फिर कर्णावती ने मेरे अंदर दुर्ग में जौहर किया.

रानी मीरा

राणा सांगा के बेटे भोजराज के साथ मेड़ता की राजकुमारी की शादी हुई. लेकिन मीरा का मन कभी रानीवासा में नही लगा.वो तो गोपाल नंदलाल यानी कृष्ण के मंदिर में ही बैठी रहती है.राणा कुंभा ने बाद में मीरा का मंदिर ही बना दिया जो आज भी चित्तौड़गढ़ में मौजूद है.

पन्ना धाय

राणा विक्रम सिंह की हत्या कर उनके चाचा का लड़का बनवीर चित्तौड़ की गद्दी पर बैठना चाहता था.तब चित्तौड़ के वारिस उदय सिंह पालना में थे.रानी कर्णावती की दाई पन्नाधाय उनकी देखभाल करती थी.जब पन्नाधाय को पता चला कि बनवीर तलवार लेकर उदय सिंह को मारने आ रहा है, तो पन्नाधाय ने चित्तौड़ के वारिस उदय सिंह को कुंभलगढ़ रवाना कर अपने बेटे चंदन को उदय सिंह के सामने सुला दिया और बनवीर ने मां पन्नाधाय के सामने ही उनके पुत्र चंदन को अपनी तलवार से दो टुकड़े कर दिए.

महाराणा प्रताप

जब अकबर ने एकबार फिर 1567 ईवीं में मेरे ऊपर हमला किया, तो उड़ई सिंह मेरे ऊपर राज करते थे.अकबर ने पूरी तरह से किले को बर्बाद कर दिया.एक बार फिर फूलकंवर के नेतृत्व में मेरे अंदर जौहर हुआ.तब हमारे राजा उदय सिंह ने 1568 में अकबर के संधि के अनुसार मुझे छोड़कर उदयपुर को अपनी राजधानी बना लिया.तब तय हुआ कि चित्तौड़ यानी मैं हमेशा के लिए वीरान रहूंगा और यहां कोई निर्माण नहीं होगा. दरअसल दिल्ली के सुल्तानों और मुगलों को हमेशा डर सताता था कि अगर चित्तौड़ आजाद और आबाद रहा, तो कभी दक्षिण नही जीत पाएंगे.मुगलों के साथ बारुद भारत में युद्ध में प्रयोग होने लगा तब तो हम बिल्कुल असुरक्षित हो गए थे. मगर मेरी गोद वीर पुत्रों से खाली नहीं थी.16 साल तक मेरी गोद में खेले महराणा प्रताप को सरदारों ने चित्तौड़ का शासक घोषित कर दिया.मैनें आखिरी हमला दिल्ली की गद्दी पर बैठे अकबर का देखा और फिर हमेशा-हमेशा के लिए इतिहास बन गया.उदय सिंह की हार हुई और मुगल की संधि के अनुसार इस किले को सिसोदिया वंश को छोड़ना पड़ा.उदय सिंह ने अपनी राजधानी उदयपुर बना ली.मगर उनके जेठ पुत्र महाराणा प्रताप इसे भुला नहीं पाए.वो इसी किले की तलहटी से अकबर से दो-दो युद्ध लड़े.और आखिरी बार हल्दीघाटी की लड़ाई हुई.

ये युद्ध हिंदुस्तान के सबसे मजबूत शासक और मुट्ठी भर लड़ाकों के साहस की लड़ाई थी.जिसे दुनिया प्रताप की वीरता के लिए याद रखती है.प्रताप और उनके हथियार बनाने वाले गड़रिया लुहारों ने ये प्रतीज्ञा ली थी कि जबतक मुझे नहीं पा लेगें वो किले में प्रवेश नहीं करेंगे.भारत आजाद हुआ तो खुद देश के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने गड़रिया लुहारों को लेकर 1955 में मेरे अंदर यानी किले में प्रवेश किया.1905 में अंग्रेजों के समय से अबतक हम दिल्ली की सरकार के अधीन रहे.मगर तब से हमारी सार संभाल ही हो रही है.

न जाने कितने कवि, लेखक और इतिहासकारों ने विभिन्न कालखंडो में मेरे बारे में और मुझ पर राज करनेवालों के बारे में क्या-क्या लिखा.मगर 2017 में इसे फिर से लिखा जा रहा है.इस बार कोई हमलावर चित्तौड़ नहीं आया है और न ही मेरे बहादुर चित्तौड़ के सैनिक इस लड़ाई को लड़ रहे हैं.मुझे इस लड़ाई से क्या हासिल होगा मुझे पता नहीं है.मैंने दुनिया के खुंखार से खुंखार आक्रांताओं और हमलावरों की खून की होली देखी है.मैं सब जानता हूं.मुझे मेरी हिफाजत करनी आती है.मै बूढ़ा नहीं हुआ हूं.मैं चित्तौड़ हूं.

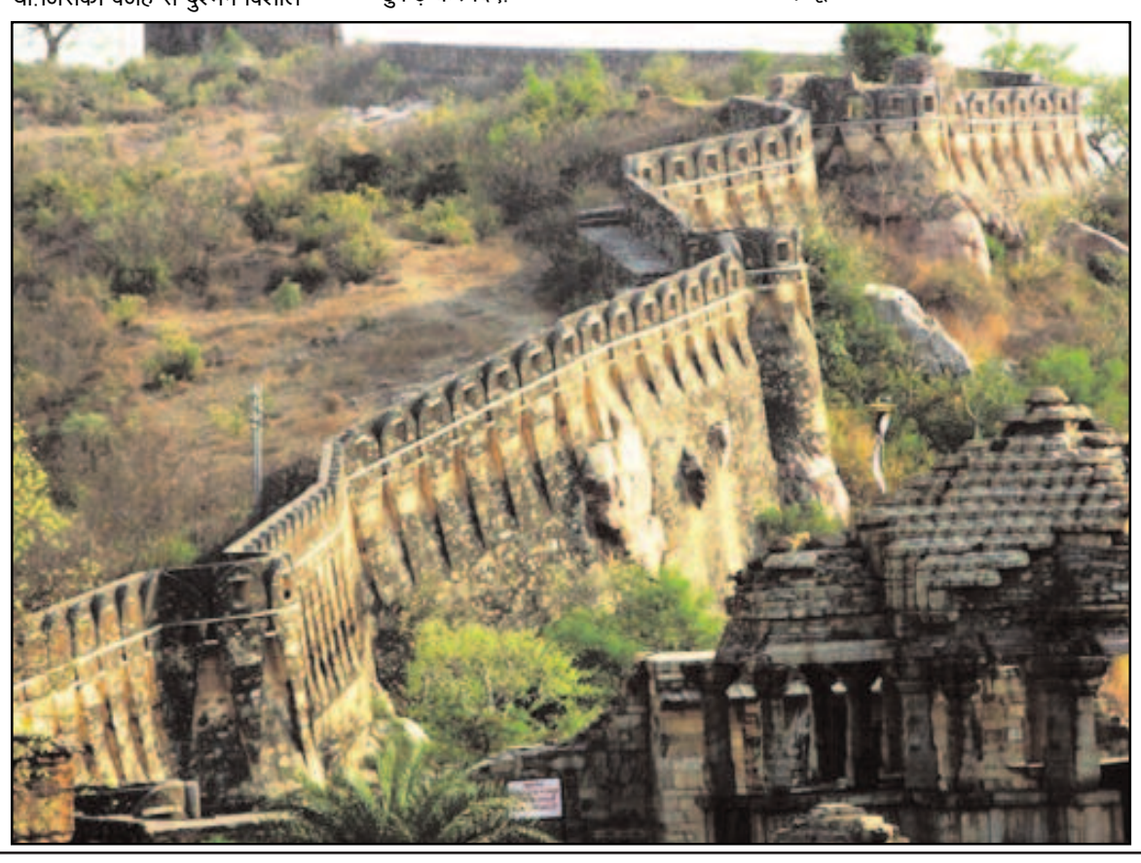

निर्दयी राजा

माधो जंगल में लकड़ियां बीन रहा था। अचानक अपने गांव से आग की लपटें उठती देखकर वह घबरा उठा। पड़ोसी राजा को अपने किले में काम कराने के लिए गुलामों की आवश्यकता थी। उस समय उसके सैनिक ही गांव वालों को गुलाम बनाकर ले जा रहे थे। माधो जान बचाने के लिए घने जंगल में भाग गया। दिन बीतने पर माधो गांव लौटा, लेकिन वहां कोई नहीं था। उसके माता-पिता को भी निर्दयी सैनिक पकड़कर ले गए थे। माधो क्रोध से उबल पड़ा। वह राजा के किले की ओर चल दिया। वह किसी तरह गांव वालों को छुड़ाना चाहता था। किसी तरह छिपता हुआ माधो किले के अंदर पहुंचगया। गांव वालों के साथ उसके माता-पिता तपती धूप में राजा के खेतों में काम कर रहे थे। पानी मांगने पर सिपाही उन पर कोड़े बरसाते थे। तभी पास खड़ी एक गरीब बुढ़िया ने माधो से पूछा, तुम्हें क्या कष्ट है बेटा?

मैं राजा की मालिन हूं।

माधो ने उसे सारी बात बताई। मालिन भी राजा की क्रूरता से बहुत दुखी थी। वह माधो को अपने घर ले गई। उसे माला गूथना सिखा दिया। फिर एक दिन उसे राजा से भी मिलवाया। राजा माधो की बनाई माला देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह माधो को महल दिखाने लगा। माधो ने पूछा, महाराज, कोई शत्रु आपके महल में घुस आए तो?

राजा उसे दीवार में लगी एक मुठिया दिखाकर बोला, अगर ऐसा हुआ, तो हम यह मुठिया घुमा देंगे। किले के सारे पानी में बेहोशी की दवा घुल जाएगी। पानी पीने वाले बेहोश हो जाएंगे। थके-मांदे शत्रु के सैनिक आते ही पानी तो पिएंगे ही। फिर राजा ने माधो को एक बड़ी सी चाबी दिखाई और बोला, यह चाबी देखो, इससे हम किले का दरवाजा बंद कर देंगे। होश में आने पर फिर कोई बाहर नहीं निकल सकता।

मालिन ने माधो को नागगंध की एक माला बनाकर दी। उसे पहनते ही राजा और रानी गहरी नींद में सो गए। माधो ने जल्दी ही वह मुठिया घुमा दी। फिर राजा की जेब से किले की चाबी निकालकर महल से बाहर आ गया।

पानी पीते ही राजा के सैनिक बेहोश होकर गिरने लगे। गांव वाले पानी पीने दौड़े, तो माधो ने उन्हें पानी नहीं पीने दिया और फौरन किले से बाहर निकल जाने के लिए कहा। सब बाहर आ गए, तो माधो ने चाबी से फाटक को बंद कर दिया।

निर्दयी राजा अपने सिपाहियों के साथ अपने ही किले में बंद हो गया। गांव वाले उसके अत्याचार से मुक्त हो गए थे।

इस किले के परिसर में है 65 से अधिक ऐतिहासिक महल, मंदिर व जलाशय

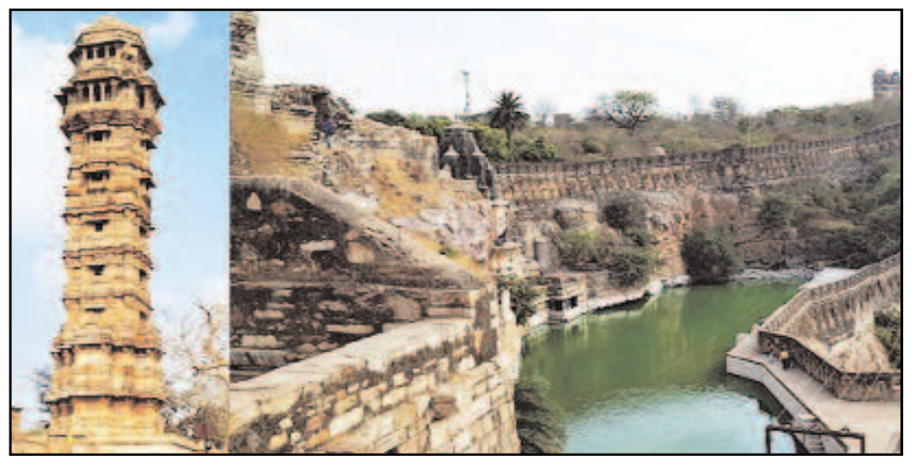

चित्तौड़गढ़ किला जिसे चित्तोर दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है भारत के प्राचीनतम किलो में से एक है.यह किला भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में प्रसिद्ध है.वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शुमार इस किलो देखने हर साल हजारो विदेशी सैलानी भारत आते है.

- चित्तौड़गढ़ किला जिसे मेवाड़ की राजधानी के नाम से भी जाना जाता हैउदाहरण के तोर पर यह किला प्राचीन समय में 834 सालो तक मेवाड़ की राजधानी रह चूका था.इसकी स्थापना 734 इक में मेवाड़ के सिसोदिया वंश के शासक बाप्पा रावल ने की थी.
- चित्तौड़गढ़ किला भारत का सबसे बड़ा किला माना जाता है.इसकी लम्बाई 3 किलोमीटर, त्रिज्या 13 किलोमीटर और यह किला लगभग 700 एकड़ जमीन पर फैला हुआ है.
- प्राचीन इतिहास के अनुसार ऐसा माना जाता है कि चित्तौड़गढ़ किले को सातवीं सदी में मौर्यों सासको द्वारा बनवाया गया था और इस किले का नाम मौर्य शासक चित्रांगदा मोरी के नाम पर रखा गया था.
- आपको जानकर हैरानी होगी इस किले के परिसर में लगभग 65 ऐतिहासिक निर्मित संरचनाएं जैसे मंदिर, महल, जलाशय, स्मारक इत्यादि बनाएं गए थे.
- चित्तौड़गढ़ किले में कुल साथ द्वार बनाएं गए थे जो प्राचीन समय में रात्रि के समय बंद कर दिए जाते थे.इन द्वारा पर लगे विशाल किवाड़ (दरवाजे) आज भी इस किले की मजबूती की गवाई देते है.
- प्राचीन समय में इन दरवाजो का नाम मुख्यता प्रथम पड़नपोल,दूसरा भैरव पोल, तीसरा हनुमान पोल, चतुर्थ गणेश पोल, पंचम जोरला पोल, छटा लक्ष्मण पोल व सातवे दरवाजे को राम पोल के नाम से जाना जाता था.
- इन दरवाजो के संदर्ब में कहाँ जाता है की प्राचीन समय में प्रत्येक दरवाजे पर द्वारपाल व पहरेदार 24 घंटे दरवाजो की निगरानी करते थे द प्रत्येक दरवाजे पर बड़े बड़े घंटे टाँगे गए थे जिन्हे बजा कर दरवाजो को खोला और बंद किया जाता था.
- इस किले में कई मंदिर स्थापित हैं जैसे कलिका मंदिर, जैन मंदिर, गणेश मंदिर, सम्मिदेश्वरा मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर और कुंभश्याम मंदिर आदि
- इस किले के परिसर में बनाया गया पद्मिनी महल एक छोटे सरोवर के निकट स्थित बहुत ही खूबसूरत महल है.इस महल के अंदर सीसे कि नकाशी कि गई है जो दिखने में बेहद खूबसूरत लगती है.
- आपको जानकर हैरानी होगी चित्तौड़गढ़ किले में आज भी 22 जलनिकाय मौजूद है.इन जल निकायों में पानी का श्रोत्र प्राकृतिक भूमिगत जल और वर्षा से प्राप्त जल के द्वारा होता है.
- चित्तौड़गढ़ किले में बनाया गया भीमला जल भंडार भारत के प्राचीन इतिहास को समेटे हुए है. ऐसा माना जाता है पांडवो में भीम ने जमींन पर अपने हाथ के वार से पानी निकाल दिया था और भूमि के जिस हिस्से से पानी निकला उसे भीमला के नाम से जाना जाता है.
- चित्तौड़गढ़ किले के खम्बो पर की गई खूबसूरत चित्रकारी प्राचीन कलाकारी का उत्कृट नमूना है. ऐसा कहा जाता है इस चित्रकारी को बनाने में 10 वर्षो का समय लगा था.
- आपको जानकर हैरानी होगी इस किले में आज भी लोग निवास करते है.उदाहरण के तोर पर चित्तौड़गढ़ किले में लगभग 20000 लोग रहते है.
- यह किला राजस्थान के शासक राजपूतों, उनके साहस, बड़प्पन, शौर्य और त्याग का प्रतीक है
- राजस्थान में मनाया जाने वाला जोहर मेला इसी किले में मनाया जाता है.
- चित्तौड़गढ़ का किला अपनी स्थापत्य कला, निर्माण शैली व पर्यटक स्थलों जैसे महल, जलाशय, स्तंभ, इत्यादि के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है.हर साल देश-विदेश सैलानी इस किले को देखने राजस्थान आते है.
- राजस्थान के पर्यटन विभाग द्वारा चित्तौड़गढ़ किले में बेहद खूबसूरत लाइटिंग की गई है जो रात के समय इस किले की खूबसूरती में चार चाँद लगा देती है.
- चित्तौड़गढ़ किले को यूनेस्को द्वारा साल 2013 में वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल किया गया था.

यह अपराध की राजधानी बन गई है... दिल्ली की बिगड़ती कानून व्यवस्था पर केजरीवाल ने अमित शाह को लिखा पत्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने राष्ट्रीय राजधानी में बिगड़ती कानून-व्यवस्था की स्थिति को लेकर शनिवार को अमित शाह को पत्र लिखा और दिल्ली में बिगड़ती कानून-व्यवस्था की स्थिति पर गृह मंत्री से मिलने का समय मांगा। केजरीवाल ने राष्ट्रीय राजधानी में चिंताजनक कानून-व्यवस्था को लेकर भाजपा के नेतृत्व वाले केंद्र पर हमला बोला था और कहा था कि अगर उनकी पार्टी की सरकार दिल्ली पुलिस पर नियंत्रण रखती तो स्थिति अलग होती।

करोल बाग में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले एक 'पदयात्रा' को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने कहा कि वह केंद्र को शहर में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मजबूर करने के लिए जनता के साथ एक आंदोलन शुरू करेंगे। राष्ट्रीय राजधानी में अपराध में वृद्धि का हवाला देते हुए, केजरीवाल ने कहा, 'भारत के 19 मेट्रो शहरों में से दिल्ली महिलाओं के खिलाफ अपराध में नंबर एक पर है। हत्या के मामले में दिल्ली नंबर वन. दिल्ली में रंगदारी वसूलने वाले गिरोह सक्रिय हो गए हैं और एयरपोर्ट तथा स्कूलों को धमकियां मिल रही हैं।'

उन्होंने कहा कि मैं पूरी दिल्ली में लोगों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हूं, जिसे अब भारत और विदेशों में अपराध की राजधानी के रूप में पहचाना जा रहा है। भाजपा ने अतीत में आप पर राजनीतिक लाभ के लिए आपराधिक तत्वों को बचाने का आरोप लगाकर आरोपों का जवाब दिया है। हालाँकि, केजरीवाल ने तर्क दिया कि इस तरह के दावे सार्वजनिक सुरक्षा के गंभीर मुद्दे से लोगों का ध्यान भटकाने का एक प्रयास थे। अगले साल की शुरुआत में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए, सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों ने एक-दूसरे के खिलाफ आरोप-प्रत्यारोप तेज कर दिए हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट के डर से आप सरकार ने लंबित सीएजी रिपोर्ट एलजी को सौंपी: उपराज्यपाल सचिवालय

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी शासित दिल्ली सरकार के कार्यकाल में वर्ष 2017 से 2021 तक लंबित नियंत्रक व महालेखा परीक्षक (सीएजी) रिपोर्ट के संबंध में उपराज्यपाल सचिवालय ने शनिवार को स्पष्ट किया कि आतिशी सरकार ने हाईकोर्ट की फटकार के डर से यह रिपोर्ट सौंपी है.

एलजी सचिवालय की तरफ से जारी नोट में बताया गया है कि दिल्ली हाईकोर्ट के प्रतिकूल आदेश के डर से आप सरकार ने लंबे समय से लंबित सीएजी रिपोर्टों को जल्दबाज़ी में उपराज्यपाल को सौंपी, ताकि रिपोर्टों को सार्वजनिक करना संभव हो सके. इन 14 लंबित सीएजी रिपोर्टों में से 11 उस समय से संबंधित हैं जब केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री थे. रिपोर्ट में डीटीसी, सार्वजनिक स्वास्थ्य और मोहल्ला क्लीनिक, राज्य सार्वजनिक उपक्रमों पर रिपोर्ट शामिल हैं, जहां आप सरकार की भारी गड़बड़ियों और विफलताओं का विवरण दिया गया है.

विजेंद्र गुप्ता ने हाईकोर्ट में दायर की थी याचिका- पिछले दिनों संपन्न विधानसभा सत्र से पहले दिल्ली विधानसभा में विपक्ष के नेता विजेंद्र गुप्ता ने हाईकोर्ट में याचिका दायर किया था. इस याचिका के बाद सरकार को लंबे समय से लंबित 14 सीएजी रिपोर्टों को सदन के पटल पर रखने का निर्देश देने की मांग की गई, सरकार जल्दबाजी में अपना चेहरा बचाने की कोशिश की है. हाईकोर्ट में सुनवाई से ठीक एक दिन पहले 11 दिसंबर को अपराह्न 03-30 बजे 12 रिपोर्टें और 12 दिसंबर को शाम 07-50 बजे 2 रिपोर्टें कोर्ट की सुनवाई समाप्त होने के बाद एलजी सचिवालय को भेजी गई. आम आदमी पार्टी सरकार में वित्त मंत्री व मुख्यमंत्री आतिशी द्वारा एलजी सचिवालय को सौंपी गई 497 दिनों से लंबित सीएजी रिपोर्टों की सूची भी एलजी सचिवालय ने जारी किया है.

एलजी ने सीएम और स्पीकर को लिखी थी चिट्ठी- बता दें, गत कई महीनों से उपराज्यपाल सक्सेना ने मुख्यमंत्री आतिशी व विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास को सीएजी रिपोर्ट विधानसभा पटेल पर रखने के संबंध में पत्र लिखा था. बावजूद यह रिपोर्ट विधानसभा सत्र में पेश नहीं किया गया. विधानसभा में नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने सीएजी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को लेकर जब हाईकोर्ट में याचिका दायर की, तोर कोर्ट ने इस मामले पर संज्ञान लिया, तब दिल्ली सरकार ने आबकारी कर, प्रदूषण और वित्त से संबंधित रिपोर्ट विधानसभा पटल पर रखने के लिए एलजी को भेज दिए. यह जानकारी दो दिन पहले ही दिल्ली सरकार ने हाईकोर्ट में दी थी. मामले की अगली सुनवाई 16 दिसंबर को है.

दिल्ली हिंसा की साजिश रचने के मामले में ताहिर हुसैन की जमानत याचिका पर दिल्ली पुलिस को नोटिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली दंगों की साजिश रचने के मामले में आरोपी ताहिर हुसैन ने कड़कड़डूमा कोर्ट में नई जमानत याचिका दायर की. कोर्ट ने जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया है. जमानत याचिका पर अगली सुनवाई 19 दिसंबर को होगी.

नई जमानत याचिका में ताहिर हुसैन ने कहा है कि कोर्ट ने 30 मार्च 2024 को उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी. उसके बाद से नौ महीने और हिरासत में गुजर गए हैं. याचिका में कहा गया है कि वो अब तक 4 साल 8 महीने हिरासत में गुजार चुका है. याचिका में कहा गया है कि इस मामले में अभी आरोप तय करने पर दलीलें रखी जा रही है और उसमें अभी काफी समय लगेगा. इस मामले में हाईकोर्ट ने आरोप तय करने पर अभी कोई भी आदेश जारी करने पर रोक लगा रखी है. ऐसे में आरोप तय करने पर अभी काफी समय लगेगा.याचिका में कहा गया है कि ताहिर हुसैन का नाम एफआईआर में दर्ज नहीं है और उसे केवल डिस्क्लोजर स्टेटमेंट के आधार पर आरोपी बनाया गया है. डिस्क्लोजर स्टेटमेंट को भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1972 की धारा 25 के तहत मान्यता नहीं दी गई है. बता दें कि इस मामले में आरोप तय करने पर सुनवाई के दौरान ताहिर हुसैन ने कहा था कि उसके व्हाट्स ऐप चैट ने दिल्ली के लोगों को हिंसा के लिए नहीं उकसाया था. ताहिर हुसैन के वकील ने कहा था कि दिल्ली पुलिस जिन व्हाट्स ऐप चैट को आधार बना रही है उसमें आरोपी ने लोगों से ये कहीं नहीं कहा कि सरकार के खिलाफ हथियार उठाएं.व्हाट्स चैट में लोगों से शांतिपूर्ण विरोध करने को कहा गया था. सरकार की नीतियों की आलोचना करना आतंकी गतिविधि नहीं -ताहिर हुसैन के वकील ने कोर्ट से कहा था कि चक्का जाम कोई आतंकी गतिविधि नहीं है. ताहिर हुसैन ने कहा था कि सरकार की नीतियों की आलोचना करना तब तक देश का विरोध करना नहीं है जब तक वो देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा न करे.बता दें कि साजिश रचने के मामले में 6 मार्च 2020 को एफआईआर दर्ज किया गया था. उसके बाद अब तक एक चार्जशीट और चार पूरक चार्जशीट दाखिल की जा चुकी है. इस मामले में उमर खालिद समेत 18 आरोपियों के खिलाफ यूएपीए के तहत दर्ज मामले में चार्जशीट दाखिल किया गया है.

भाजपा में लौटने को घर वापसी बताने वाले अरविंदर सिंह लवली ने छात्र राजनेता के तौर की थी अपनी पारी की शुरुआत

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली की गांधी नगर सीट से पूर्व विधायक अरविंदर सिंह लवली हाल ही में भारतीय जनता पार्टी के सदस्य बने हैं । उन्होंने 2013 से 2015 तक और फिर 2023 से 2024 तक दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष का पद संभाला। 1998 में वे गांधी नगर निर्वाचन क्षेत्र से सबसे कम उम्र के विधायक के रूप में दिल्ली विधानसभा के लिए चुने गए थे। लवली 2003, 2008 और 2013 में फिर से चुने गए। वे दिल्ली की शीला दीक्षित सरकार में शहरी विकास और राजस्व, शिक्षा, परिवहन, पर्यटन, भाषा, गुरुद्वारा चुनाव, स्थानीय निकाय और गुरुद्वारा प्रशासन मंत्री भी रह चुके हैं। अरविंदर सिंह लवली ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और मई 2024 को फिर से भाजपा में शामिल हो गए।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

अरविंदर सिंह लवली का जन्म 11 दिसंबर को 1968 बलविंदर सिंह के घर हुआ था। गांधीनगर में जन्मे और पले-बढ़े उन्होंने छोटी उम्र में ही सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों में गहरी रुचि विकसित कर ली थी। दिल्ली विश्वविद्यालय के एसजीटीबी खालसा कॉलेज से राजनीति विज्ञान में स्नातक की पढ़ाई करते समय सिंह कॉलेज के छात्र संघ के लिए चुने गए और विभिन्न सामाजिक और शैक्षणिक संगठनों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे। वे दिल्ली के भीमराव अंबेडकर कॉलेज के अध्यक्ष भी बने।

1990 में उन्हें दिल्ली प्रदेश युवा कांग्रेस का महासचिव चुना गया और फिर 1992 से 1996 के बीच उन्होंने NSUI के महासचिव के रूप में कार्य किया। कांग्रेस पार्टी की दिल्ली इकाई में सबसे प्रमुख नामों में से एक लवली करीब 30 साल से कांग्रेस से जुड़े हुए हैं। अरविंदर सिंह लवली पहली बार 1998 में गांधी नगर सीट से दिल्ली विधानसभा के लिए चुने गए थे। साल 2017 में लवली ने कांग्रेस छोड़ भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया था, लेकिन कुछ ही महीनों के बाद वो कांग्रेस में वापस लौट आए थे।

शीला सरकार में राजस्व, शिक्षा और परिवहन मंत्री रहे

लवली दिल्ली कांग्रेस के दो बार प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं। 1998 से 2013 तक दिल्ली से कांग्रेस विधायक रहे। साथ ही 2003 से 2013 तक दिल्ली सरकार में मंत्री रहे। लवली ने दिल्ली में शीला दीक्षित के नेतृत्व वाली सरकारों में शहरी विकास और राजस्व मंत्रालय, शिक्षा और परिवहन जैसे कई महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी संभाली। वो दिल्ली में सबसे लंबे समय तक शिक्षा मंत्री रहे। शिक्षा मंत्री रहते लवली ने स्कूलों में एडमिशन प्रक्रिया में भ्रष्टाचार खत्म किया। श्रद्धुस् और लाडली योजनाएं शुरू की, शहरी विकास मंत्री रहते अवैध कॉलोनियां नियमित की। लवली ने क्रिकेटर से राजनेता बने गौतम गंभीर और आतिशी के खिलाफ पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन वो गौतम गंभीर से 3,92,000 वोटों से हार गए थे।

2017 में बीजेपी में हुए थे शामिल

साल 2017 में लवली ने कुछ समय के लिए पार्टी से अपना नाता तोड़ लिया और अप्रैल 2017 में भाजपा में शामिल हो गए थे, लेकिन कुछ महीनों के बाद वह यह कहते हुए कांग्रेस में लौट आए कि वो बीजेपी में वैचारिक रूप से फिट नहीं है। साल 2020 के दिल्ली चुनाव में कांग्रेस ने अरविंदर सिंह लवली को विधानसभा क्षेत्र गांधी नगर से मैदान में उतारा था। जहां उनका मुकाबला आप के नवीन चौधरी और बीजेपी के अनिल बाजपेयी से था। इस सीट से आप के अनिल कुमार बाजपेयी ने जीत हासिल की थी।

विजेंद्र गुप्ता ने दिल्ली सरकार पर भाजपा विधायकों के क्षेत्रों के साथ पक्षपात करने का आरोप लगाया

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं भाजपा की आरोप पत्र समिति के संयोजक विजेंद्र गुप्ता ने आज दिल्ली की भाजपा विधायकों के निर्वाचन क्षेत्र वाली आठ विधानसभाओं को लेकर आम आदमी पार्टी (आप) की सरकार के खिलाफ आरोप लगाया कि दिल्ली सरकार भाजपा विधायकों के विधानसभा क्षेत्रों में जानबूझकर विकास कार्यों में रोड़े अटकाती है और उनके साथ पक्षपात करती है। पिछले दस साल में सरकार इन क्षेत्रों के लिए पर्याप्त धनराशि मुहैया नहीं करवाई। भाजपा ने शनिवार को आम आदमी पार्टी सरकार के खिलाफ आठ भाजपा विधायकों की विधानसभा क्षेत्रों पर चार्जशीट जारी की। इन आठ चार्जशीट के साथ ही अब तक दिल्ली भाजपा कुल 33 विधानसभाओं की चार्जशीट जारी कर चुकी है। आज जिन विधानसभाओं की चार्ज शीट जारी की गई है उनमें रोहिणी, विश्वास नगर, लक्ष्मी नगर, गांधीनगर, बदरपुर, करावल नगर, रोहतास नगर और घोंडा विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। इस अवसर पर विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि दिल्ली की आप की सरकार भाजपा विधायकों के विधानसभा क्षेत्रों के साथ भेदभाव करती है। उनके क्षेत्र में विकास कार्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध नहीं करवाती है। उन्होंने कहा कि आप सरकार ने उनके विधानसभा क्षेत्र रोहिणी के सेक्टर 18 में ढाई हजार बच्चों के लिए बनाए गए स्कूल को जबरदस्ती 'स्कूल आफ एक्सीलेंस' का नाम दे दिया और वर्तमान में इस स्कूल में केवल दो सौ बच्चे ही पढ़ रहे हैं, जिनमें रोहिणी या इसके आसपास के क्षेत्र का एक भी बच्चा नहीं है। इसी तरह 'मुख्यमंत्री सड़क पुनर्निर्माण योजना' के तहत हर साल एक हजार करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान होने के बावजूद क्षेत्र की सड़कों के लिए एक रुपया भी आवंटित नहीं किया गया। 2021 में रोहिणी विधानसभा के लिए दो हजार सीसीटीवी कैमरे खरीदे गए लेकिन केजरीवाल के निर्देश पर इनका इंस्टॉलेशन रोक दिया गया। गुप्ता ने कहा कि न केवल रोहिणी बल्कि अन्य भाजपा विधायकों की विधानसभा क्षेत्रों के साथ भी सरकार ने यही रवैया अपनाया है और विकास कार्यों में रोड़े अटकाए हैं। करावल नगर, घोंडा और विश्वास नगर विधानसभा का उदाहरण देते उन्होंने कहा कि यहां पर एक भी सीसीटीवी नहीं लगाया गया। गंदे पानी की सप्लाई, बंद पड़े मोहल्ला क्लीनिक, मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण, डीटीसी बसों की अनुपलब्धता, सीवर कनेक्शन चालू न करने जैसे मुद्दे सरकार की निष्क्रियता के कारण क्षेत्र की जनता के लिए सिर दर्द बने हुए हैं। इसके अलावा बदरपुर, रोहतास नगर और लक्ष्मी नगर जैसे भाजपा विधायकों के क्षेत्रों में भी सभी विकास कार्य रुके पड़े हैं। यहां गरीबों के राशन कार्ड नहीं बनाए जा रहे हैं, गंदगी से निपटने के लिए कोई उपाय नहीं किया गया, फुटपाथ पर अतिक्रमण, टूटी सड़कें, नालों की सफाई न होना, बदहाल सार्वजनिक शौचालय, सड़कों का चौड़ीकरण, कचरा संग्रहण, साफ सफाई की व्यवस्था न होना, डिस्पेंसरी में दवाइयों की अनुपलब्धता जैसी समस्याएं दिल्ली सरकार के पक्षपातपूर्ण रवैये और असहयोग के कारण यहां के लोगों के समक्ष खड़ी हुई हैं।

दिल्ली के मुद्दों पर कांग्रेस न्याय घोषणापत्र जारी करेगी

नई दिल्ली। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए दिल्ली कांग्रेस न्याय घोषणापत्र जारी करेगी। इसमें तमाम मुद्दों को समाहित किया जाएगा और उसके समाधान को लेकर पार्टी अपने विचार लोगों के सामने रखेगी। न्याय यात्रा के दौरान आम लोगों से मिले सुझावों को भी इसमें शामिल किया जाएगा। राजधानी में 15 वर्षों तक शासन करने वाली कांग्रेस पिछले 11 सालों से सियासी संकट का सामना कर रही है। आम आदमी पार्टी के उदय के बाद से ही उसका जनाधार कम होता रहा है और पिछले दो विधानसभा चुनावों में तो उसे एक भी सीट हासिल करने में सफलता नहीं मिली थी। पार्टी की ओर से 21 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी गई है। वहीं, जनता के साथ जुड़ने के लिए पार्टी की ओर से न्याय घोषणापत्र तैयार किया जा रहा है। हाल ही में प्रदेश कांग्रेस ने एक खाली कुर्सी के साथ दिल्ली भर में यात्रा निकाली थी। इस खाली कुर्सी के साथ हर कोई दिल्ली को परेशान करने वाले मुद्दों की जानकारी रख सकता था। वहीं, न्याय यात्रा के दौरान भी अलग-अलग तबकों से उनकी परेशानियों को जानने और उनके समाधान पर विचार-विमर्श किया गया है। प्रदेश कांग्रेस घोषणापत्र समिति के चेयरमैन अनिल चौधरी ने बताया कि घोषणापत्र की उप समितियों के साथ चर्चा का एक दौर हो चुका है। इसी आधार पर न्याय घोषणापत्र को अंतिम रूप दिया जा रहा है। जल्द ही इसे जनता के समक्ष रखा जाएगा ताकि पूरे चुनाव के दौरान ज्यादा से ज्यादा लोगों तक इसका प्रचार किया जा सके।

वर्ष 2023 में तपेदिक की घटनाओं की दर 17.7 प्रतिशत घटकर 195 प्रति लाख रह गई : नड्डा

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने शुक्रवार को लोकसभा को बताया कि भारत में तपेदिक की घटनाओं की दर 2015 में प्रति एक लाख की आबादी पर 237 से 17.7 प्रतिशत घटकर 2023 में 195 रोगी प्रति लाख रह गई है। नड्डा ने सदन में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि तपेदिक से होने वाली मौतें 2015 में प्रति एक लाख की आबादी पर 28 से 21.4 प्रतिशत घटकर 2023 में 22 रह गयी है। भारत सरकार ने 2025 तक तपेदिक को खत्म करने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय रणनीतिक योजना (2017-2025) लागू की है, जो संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) 2030 से पांच साल पहले है। मंत्रालय राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तत्वावधान में राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) लागू करता है। मंत्री ने कहा, ''एनटीईपी ने भारत को टीबी मुक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

बदमाश सोनू मटका एनकाउंटर में ढेर, दिल्ली में डबल मर्डर केस में था वॉन्टेड

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस ने दोहरे हत्याकांड के आरोपी और 50 हजार के इनामी बदमाश को मुठभेड़ में ढेर कर दिया. वह हाशिम बाबा गैंग का कुख्यात शूटर था. उसके खिलाफ यूपी और दिल्ली में लूट और हत्या के आधा दर्जन मामले दर्ज हैं. शनिवार की सुबह यूपी स्पेशल टास्क फोर्स और दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल के साथ संयुक्त ऑपरेशन में दिल्ली में दोहरे हत्याकांड का वांछित और 50, 000 रुपये का इनामी बदमाश सोनू मटका मेरठ जिले के टीपी नगर थाने में मुठभेड़ के दौरान घायल हो गया.

वहीं इस पूरे घटनाक्रम पर पुलिस हेडक्वार्टर में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए डीसीपी स्पेशल सेल प्रतीक्षा गोदारा ने जानकारी देते हुए बताया कि अपराधियों के खिलाफ दिल्ली पुलिस लगातार काम कर रही है. दिवाली पर हुए फर्श बाजार दोहरे हत्याकांड पर लगातार टीम काम कर रही थी. जब फर्श बाजार में दोहरा हत्याकांड हुआ था तब से लगातार पुलिस टीम टेक्निकल इंटेलिजेंस पर काम कर रही थी.

फर्श बाजार दोहरे हत्याकांड को लेकर दी जानकारी : जब शनिवार सुबह हमें एक जानकारी हासिल हुई कि दोहरे हत्याकांड का मुख्य आरोपी सोनू अनिल एलिस उर्फ मटका का अपने गांव बागपत जाने का कार्यक्रम है . हमने अपनी एक टीम को बागपत की ओर रवाना किया. बागपत का कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश के अंतर्गत आता है. इसलिए यह सूचना यूपी पुलिस से भी साझा की गई. यूपी पुलिस में उनकी एसटीएफ हमारे साथ-साथ आई. जब हम उसका पीछा कर रहे थे. मेरठ बाईपास पर जब वह गिरा तो उसने पुलिस पार्टी पर फायरिंग शुरू कर दी. इस दौरान अपने बचाव में पुलिस वालों ने फायरिंग कर दी. इस पुलिस फायरिंग में वह गंभीर रूप से घायल हो गया .जब उसे अस्पताल पहुंचाया गया तो उसे मृत घोषित कर दिया गया.

पुलिस से मिली जानकारी में ये खुलासा हुआ है कि साल 2015 से यह एक्टिव है इस पर लगभग 6 जघन्य अपराधों के मुकदमे लूटपाट और हत्या के मुकदमे हैं. साल 2021 में यह जमानत पर बाहर आया था उसके बाद से ही दो लूटपाट की घटनाओं में वांछित चल रहा था. एक करोल बाग और दूसरी लाहौरी गेट में था. जिसमें उसके ऊपर 50, 000 और 1 लाख का इनाम घोषित किया गया था. तीसरा फर्श बाजार दोहरा हत्याकांड जो दीपावली के मौके पर हुआ उसमें यह वांछित अपराधी था. स्क्रब ने हम से सूचना साझा की थी ताकि हमारी टीम उसे ट्रैक करे.

मटका के कब्जे से 2 पिस्टल, 1 मोटरसाइकिल 13 लाइव कार्टेज बरामद : मृतक अपराधी मटका के कब्जे से पुलिस ने दो पिस्टल हमने बरामद किए हैं. एक मोटरसाइकिल 13 लाइव कार्टेज मिले हैं. जब यह क्राइम की दुनिया में दाखिल हुआ. यह हाशिम बाबा से गैंग से जुड़ा था. लेकिन अभी हमारी जानकारी के अनुसार राशिद केबलवाला के कहने पर उसने फर्श बाजार में डबल मर्डर को अंजाम दिया।

पारिवारिक राष्ट्रीय लोक अदालत में 63 परिवारों को जोड़ा गया

अलीगढ़ : प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय श्री रणवीर सिंह के दिशा निर्देशन में पारिवारिक राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया, जिसमें 63 साथ- साथ परिवारों को जोड़ा गया और कुल 302 वाद निस्तारित किए गए। इस अवसर पर प्रधान न्यायाधीश श्री रणधीर सिंह अपर प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय चतुर्थ श्रीमती ललिता गुप्ता व अपर प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय प्रथम श्रीमती नूपुर व अपर प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय तृतीय श्रीमती ज्योति सिंह अपर प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय द्वितीय श्री ज्ञानेन्द्र सिंह मौजूद रहे तथा कार्यक्रम में परिवार न्यायालय के काउंसलर योगेश सारस्वत योगेश शंकर भारद्वाज अनीता गर्ग यतेंद्र कुमार तथा मेडिएटर योगेंद्र उपाध्याय नरेंद्र कुमार शबनम फातिमा सुमन वर्मा भी उपस्थित रहे तथा प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय के पेशकार रीडर सौरभ चौधरी लिपिक सत्येंद्र कुमार व संजीव कुमार व स्टैनो महेंद्र स्वरूप व बनवारी लाल व अजय कुमार भी उपस्थित रहे ।सभी जोड़ों को माला पहनाकर और मिष्ठान खिलाकर हंसी-खुशी से प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता में विदा किया गया।

दुबई में एएमयू के पूर्व प्रो को सम्मानित किया गया

अलीगढ़ : अमुवि के जीवन विज्ञान संकाय के पूर्व डीन और वनस्पति विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो मोहम्मद अनीस को 12 दिसंबर को यूएई के अबू धाबी में आयोजित एक पुरस्कार समारोह में हर्बल मेडिसिन में तीसरे शेख जायद अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।प्रो अनीस को हर्बल मेडिसिन में उनके योगदान और शोध के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने यह पुरस्कार अपने देश भारत और एएमयू को समर्पित किया है।उन्हें इससे पूर्व यूजीसी-बीएसआर प्रतिष्ठित फेलोशिप (2017-21), विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद, यूपी सरकार द्वारा विज्ञान रतन सम्मान (2010) मिल चुका है और वह 2020 में भारतीय वनस्पति सोसायटी के अध्यक्ष चुने गए, और किंग सऊद विश्वविद्यालय, रियाद में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य करने सहित उन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए हैं।

प्रो. गुजन दुबे शिक्षा विभाग की नई अध्यक्ष नियुक्त

अलीगढ़ 14 दिसंबर: अमुवि के शिक्षा विभाग की प्रोफेसर गुंजन दुबे को तीन साल के लिए उनके विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।प्रो दुबे लगभग 30 वर्षों से शिक्षण और शोध में लगी हुई हैं। वह पर्यावरण शिक्षा पर एक पुस्तक लिख चुकी हैं और प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में 40 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। वह 30 से अधिक सम्मेलनों, सेमिनारों और संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।उनकी रूचि के शोध के क्षेत्रों में दूरस्थ शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान, शोध पद्धति और जैविक विज्ञान का शिक्षण शामिल हैं।

सरस्वती विद्या मंदिर की छात्राएँ प्रयागराज में दिखाइएगी अपने मुक्के का दम

अलीगढ। सरस्वती विद्या मंदिर सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, खैर रोड की पाँच छात्राओं का प्रयागराज में राज्य स्तरीय समन्वय जूनियर मुक्केबाजी प्रतियोगिता हेतु चयन हुआ है। कक्षा 11 की छात्रा तनिशा सिंह, ट्विंकल सिंह, कक्षा 10 की छात्रा वैशाली शर्मा और मुस्कान एवं कक्षा 9 की छात्रा मोनिका चौधरी 16 से 18 दिसम्बर तक प्रयागराज के मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में बॉक्सिंग में प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगी।इस गौरवान्वित पल पर विद्यालय के प्रबन्धक डॉ. राजीव अग्रवाल ने छात्राओं को शुभकामनाएँ दीं। उन्होने कहा कि विद्यालय की छात्राएँ खेल में लगातार शानदार प्रदर्शन कर रही हैं। मुझे विश्वास है कि प्रयागराज में होने वाली इस प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में अपने दमखम से जीत हासिल करेंगी।प्रधानाचार्य यशवीर सिंह ने कहा कि मुक्केबाजी में छात्राओं का प्रदर्शन निरंतर बेहतर हुआ जिसका परिणाम है कि जिला, मण्डल के बाद प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा के दम पर चयन हुआ है। ये सभी छात्राएँ खेल शिक्षक राजकुमार सिंह एवं हितेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में निश्चित ही सफलता प्राप्त करेंगी।

मंगलायतन विश्वविद्यालय का किया शैक्षणिक भ्रमण

अलीगढ़। इगलास के एलबीके पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए पहचाने जाने वाले मंगलायतन विश्वविद्यालय का दौरा किया। यह भ्रमण विद्यार्थियों के लिए न केवल ज्ञानवर्धक रहा, बल्कि उन्हें उच्च शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर भी मिला। इस दौरान उन्होंने फार्मेसी लैब, बायोटेक लैब, एग्रीकल्चर, हर्बल गार्डन, कंप्यूटर लैब, मैकेनिकल वर्कशॉप, हास्पिटल, फाइन आर्ट गैलरी, लाइब्रेरी, टीवी स्टूडियो आदि का विस्तृत भ्रमण किया। पाठ्यक्रम के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की। प्रोफेसरों ने विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अनुसंधान, नवीनतम तकनीकों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। प्रो. मसूद परवेज ने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा कैसे उनके भविष्य को आकार दे सकती है इस संबंध में जानकारी साझा की। डायरेक्ट एडमिशन प्रो. सौरभ कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रतिवर्ष पांच करोड़ की विशेष छात्रवृत्ति बालिकाओं की निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रदान कर रहा है। साथ ही विभिन्न श्रेणियां जैसे मेधावी विद्यार्थी, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों को भी विशेष छात्रवृत्ति प्रदान करता है। सीनियर मार्केटिंग मैनेजर मयंक प्रताप सिंह ने कहा कि ऐसे भ्रमण कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। भ्रमण में अमित शर्मा, उदय, आशीष कुशवाह, विवेक, विपिन वशिष्ठ, मनीष गरिमा, रुचि का सहयोग रहा।

नूंह में पुरानी रंजिश के चलते महिला को जिंदा जलाया, रूह कंपा देगी ये घटना

नूंह । नूंह जिले के पुनहाना थाना क्षेत्र के लहरवाडी गांव में पुरानी रंजिश के चलते महिला पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी, जिससे महिला की मौत हो गई। इस मामले में पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मड़ीखेड़ा अस्पताल पहुंचा दिया है। फिलहाल पुलिस ने चार दर्जन आरोपियों के खिलाफ हत्या सहित अन्य धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम कराने में जुटी हुई है।

पुरानी रंजिश के चलते दिया वारदात को अंजाम

जानकारी के मुताबिक नूंह जिले के लहरवाडी गांव में लगभग सात महीने पहले जमीन के विवाद को लेकर दो पक्षों में झगड़ा हो गया था। जिसमें 21 वर्षीय रिजवान नाम के युवक की मौत हो गई थी। इस मामले में पुनहाना पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर कई लोगों को जेल भेज दिया था। इसी बात को लेकर उसी समय से दोनों पक्षों में पुरानी रंजिश चली आ रही थी। शुक्रवार को पुलिस जब आरोपी पक्ष के लोगों को सात माह बाद उनके गांव में उनके घरों में बसाने के लिए लाई तो पुलिस के जाने के बाद दोनों पक्षों में कहासुनी हो गई। इतना ही नहीं इस दौरान 31 वर्षीय शहनाज पुत्री याकूब की पेट्रोल छिड़ककर हत्या कर दी गई।

भाई बोला– आरोपी पक्ष ने पहले ही घर में रखा था पेट्रोल

वहीं मृतक शहनाज के भाई का कहना है कि आरोपी पक्ष ने पहले ही अपने घरों में पेट्रोल रखा हुआ था, जिससे उनकी बहन पर पेट्रोल छिड़ककर माचिस से आग लगा दी।

बस इतनी–सी बात के लिए ले ली वेटर की जान, वजह जान आप होंगे हैरान

फरीदाबाद । फरीदाबाद शहर के सैनिक कॉलोनी में आयोजत शादी समारोह में सर्विस में देरी होने पर वेटर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरु की। पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। मृतक का नाम बादशाह खान था, जिसकी सैनिक कॉलोनी में एक शादी समारोह में गोली मार कर हत्या कर दी गई। बादशाह खान आदर्श कॉलोनी का रहने वाला था और शादी समारोह में वेटर का काम करता था। रिसेप्शन में कॉकटेल पार्टी चल रही थी। तभी सर्विस में थोड़ी देरी हुई तो शादी में आए शख्स ने गोली मार दी जिसके चलते उसकी मौत हो गई। वहीं चौकी इंचार्ज सतवीर सिंह ने जानकारी दी है कि गोली अवैध पिस्तौल से मारी गई है। फिलहाल पुलिस जांच में जुटी हुई है।

नाबालिग लड़की को पड़ोसी युवक ने बनाया हवस का शिकार, बच्ची ने दिया बच्चे को जन्म

सोनीपत। सिविल लाइन थाना क्षेत्र में नाबालिग लड़की को पेट दर्द होने की शिकायत पर परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे। परिजनों को बेटी के गर्भवती होने की जानकारी मिली, जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे खानपुर रेफर कर दिया। शहर के गीता भवन चौक पहुंचने पर नाबालिग ने एंबुलेंस में प्री–मैच्योर नवजात को जन्म दिया। एंबुलेंस पर तैनात कर्मचारी उसे लेकर वापिस अस्पताल पहुंचे, जहां नवजात को नर्सरी में भर्ती करवाया गया। अस्पताल में दोनों की हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने नाबालिग लड़की के पिता के बयान पर आरोपित दुकानदार के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। शहर निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह मेहनत–मजदूरी का काम करता है। गत दिवस देर रात को उसकी नाबालिग बेटी के पेट में दर्द होना शुरू हो गया। वह उसे लेकर नागरिक अस्पताल पहुंचे। जहां उसे आपातकालीन कक्ष में भर्ती करवाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उसे महिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल खानपुर रेफर कर दिया। शहर के गीता भवन चौक पहुंचने पर नाबालिग की हालत खराब हो गई। एंबुलेंस में तैनात महिला कर्मचारी ने देखा तो नाबालिग ने नवजात बच्ची को जन्म दिया। उसके बाद दोनों को वापिस अस्पताल में लेकर जाया गया। जहां दोनों की हालत नाजुक बनी हुई है। सिविल लाइन थाना प्रभारी सतबीर सिंह ने बताया कि नाबालिग लड़की के पिता के बयान पर आरोपित के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। जल्द से जल्द आरोपित को काबू कर आगामी कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। नाबालिग लड़की व प्री–मैच्यौर नवजात की हालत नाजुक बनी हुई है। उन्हें अस्पताल (॥श्च्ह्वश्चद्बह्लड्डद्य) में भर्ती करवाया गया है।

हरियाणा के 17 जिलों में शीतलहर का अलर्ट, हिसार में पड़ रही हाड़ कंपाने वाली ठंड ; जानें कब मिलेगी राहत

चंडीगढ़ । उत्तर–पश्चिम से हरियाणा की तरफ आ रही पहाड़ी हवाओं के कारण राज्य शीतलहर की चपेट में है। मौसम विभाग ने प्रदेश के 17 जिलों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया है। हालांकि धूप खिलने से तापमान में मामूली बढ़ोतरी हुई है। रात के न्यूनतम तापमान में औसतन 2 डिग्री की बढ़ोतरी हुई है। इसके बाद भी यह सामान्य से 2 डिग्री कम है। हिसार में लगातार तीसरे दिन पारा 2 डिग्री से नीचे रहा। मौसम विभाग ने प्रदेश के 17 जिलों में 14 और 15 दिसंबर को शीतलहर का यलो अलर्ट भी जारी किया है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार 16 दिसंबर से शीतलहर से राहत मिलने की उम्मीद है।

इन जिलों में शीतलहर का अलर्ट

हरियाणा में बढ़ती शीतलहर को देखते हुए 17 जिलों में शीतलहर का यलो अलर्ट जारी किया गया है। जिनमें पंचकूला, अंबाला, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, भिवानी, रोहतक, चरखी दादरी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, गुरुग्राम, फरीदाबाद, नूंह (मेवात) और पलवल शामिल हैं। इन जिलों में 10 से 11 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से ठंडी हवाएं चलेंगी, कुछ जगहों पर बादल छाने के भी आसार हैं।

डल्लेवाल की सुप्रीम कोर्ट से अपील, कहा– किसानों की मांगो को लेकर सरकार पर बनाया जाए दबाव

नरवाना/जींद । खनौरी बॉर्डर पर आमरन अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने संबोधित करते हुए सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद किया है। डल्लेवाल बोले सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि आंदोलन से ज्यादा जरूरी डल्लेवाल की जिंदगी

जरूरी है, इस पर मैं सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद करना चाहुंगा जो मेरी जिंदगी की परवाह की। डल्लेवाल ने आगे कहा कि देश में अभी तक 7 लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं। जो जिंदगी उनके बच्चों के लिए कितनी जरूरी थी। मैं माननीय सुप्रीम कोर्ट से अपील करना चाहुंगा कि उन्हें सरकार पर दबाव बनाकर किसानों की मांगों को मानने के लिए कहा जाए। कम से कम किसानों को स्वामीनाथन रिपोर्ट के अनुसार रूस्क्वमिले। डल्लेवाल ने कहा, 26 तारीख से किसानों में आक्रोश बहुत ज्यादा है। केंद्र व राज्य सरकारों ने ऐसी गलती ना करें जिसे किसान बर्दाश्त न कर पाएं। अगर ऐसी कोई गलती हुई या किसी किसान का नुकसान हुआ तो उसकी जिम्मेदार केंद्र सरकार होगी।

हरियाणा सरकार का बड़ा ऐलान, सड़क दुर्घटना में घायलों के लिए इतने लाख तक का होगा मुफ्त इलाज

चंडीगढ़ । हरियाणा में सड़क हादसों में घायल लोगों को सरकार ने बड़ी राहत दी है। सरकार अब सड़क हादसों में घायलों को डेढ़ लाख रुपये का मुफ्त इलाज कराएगी। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की अनुपालना में हरियाणा पुलिस ने यह नई पहल शुरू की है। इस योजना के तहत दुर्घटना की तिथि से अधिकतम 7 दिनों की अवधि तक प्रत्येक सड़क दुर्घटना के लिए प्रति व्यक्ति डेढ़ लाख रुपये तक का इलाज मुफ्त मुहैया कराया जाएगा। इस संबंध में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) हरदीप दून ने प्रदेश के सभी संबंधित अधिकारियों व जिलों को पत्र जारी कर इसका सख्ती से पालन करने के निर्देश दिए हैं।

इस बारे में जानकारी देते हुए पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने बताया कि प्रदेश की सड़कों को आमजन के लिए सुरक्षित बनाना हमारी प्राथमिकताओं में से एक है ऐसे में जरूरी है कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए एक बेहतर और प्रभावी कार्य योजना तैयार करते हुए उन पर काम किया जाए। इसी कड़ी में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को निःशुल्क उपचार संबंधी सुविधाएं उपलब्ध करवाने की शुरूआत की गई है। उन्होंने बताया कि यह पायलेट प्रौजेक्ट नेशनल हैल्थ अथोरिटी द्वारा स्थानीय पुलिस व राज्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा अनुबंधित अस्तपतालों के साथ तालमेल स्थापित करते हुए संयुक्त रूप से लागू किया जाएगा। इस दौरान दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति का मोटर व्हीकल एक्ट 1988 की धारा 162 के तहत अधिकतम 7 दिनों तक 1.5 लाख रूप्ये की सीमा तक निःशुल्क ईलाज किया जाएगा।

कैशलैस सुविधा लेने की प्रक्रिया

इस योजना के तहत सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को अस्पताल ले जाया जाता है। इसके बाद अस्पताल प्रबंधन द्वारा अपने यहां साफटवेयर में घायल व्यक्ति का डेटा अपलोड करके संबंधित पुलिस थाने में भेजा जाता है जिसके बाद संबंधित पुलिस थाने द्वारा 6 घंटे के भीतर पुष्टि की जाती है कि घायल व्यक्ति सड़क दुर्घटना में घायल हुआ है अथवा नही। पुष्टि होने के उपरांत घायल व्यक्ति को कैशलैस ईलाज की सुविधा दी जाती है।

तुलनात्मक विश्लेषण, उपलब्धियां व उपाय

कपूर ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए हरियाणा पुलिस द्वारा कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए काम किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2023 की अपेक्षा वर्ष 2024 में 616 सड़क हादसों में कमी दर्ज की गई है। इसके साथ ही, वर्ष 2023 की तुलना में वर्ष 2024 में 251 सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु में भी कमी आई है तथा 403 लोग कम घायल हुए हैं। उन्होंने बताया कि जनवरी 2024 से लेकर नवंबर 2024 के अंत तक हरियाणा पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा के 2166 जागरूकता अभियान चलाए गए जिनके माध्यम से 2 लाख 91 हजार 307 बच्चों व अन्य लोगों ने भागीदारी सुनिश्चित की। इसके अलावा, वर्ष-2024 में 6 विशेष अभियान चलाए गए जिनमें से पांच अभियान लेन ड्राइविंग तथा एक विशेष अभियान वाहनों पर ब्लैक फिल्म लगाने वालों के खिलाफ चलाया गया। विशेष अभियान के दौरान प्रदेश में 27 हजार 321 वाहनों के चालान किए गए जिनमें से 2600 चालान ब्लैक फिल्म लगाने वाले वाहनों के चालान किए गए।

रणनीतिक सांझेदारी

इसके साथ ही प्रदेश में ऐसे ब्लैक स्पॉट्स भी चिन्हित किए गए हैं जहां पर सड़क दुर्घटनाएं अपेक्षाकृत अधिक होती हैं। इन ब्लैक स्पॉट्स को संबंधित रोड इंजीनियरिंग विभागों के साथ तालमेल स्थापित करते हुए इन्हें ठीक करवाया जाता है। सड़क सुरक्षा संबंधी विषय की गंभीरता को देखते हुए प्रदेश के अलग-2 जिलो में सड़क सुरक्षा समिति गठित की गई हैं जिसके द्वारा एजेंडावार सड़क सुरक्षा को लेकर नियमित बैठकें की जाती हैं। वर्ष-2024 में अक्टूबर माह के अंत तक इस प्रकार की 107 बैठकें आयोजित की गई हैं जिसकी अध्यक्षता संबंधित जिले के उपायुक्त द्वारा की जाती है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में सड़क सुरक्षा समिति द्वारा वर्ष-2024 में 19 हजार 261 स्कूल बसों की चैकिंग की गई जिनमें से 4,657 स्कूल बसों का अनियमितता पाए जाने पर चालान किए गए। श्री कपूर ने बताया कि प्रदेश में वर्तमान में कुल 66 टोल प्लाजा है जिन पर वे-इन-मोशन मशीनें लगाई जानी है इनमें से 54 टोल प्लाजा पर ये मशीने लगाई जा चुकी है जिनमें से 29 वे इन मोशल मशीनों के माध्यम से ओवरलोडिड वाहनों के चालान किए जा रहे हैं और जल्द ही अन्य टोल प्लाजा पर भी इसे शुरू किया जाएगा।

डीजीपी की अपील

कपूर ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। आमजन को सड़कों को सुरक्षित बनाने में अपना सहयोग देना चाहिए और वाहनों को निर्धारित गति सीमा में ही चलाना चाहिए। हरियाणा पुलिस द्वारा आमजन को यातायात नियमों के बारे में जागरूक करने के लिए अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं व गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। उन्होंने कहा कि वाहन चलाते समय लोग मोबाइल फोन आदि का भी इस्तेमाल ना करें। व्यक्ति की जरा सी लापरवाही ना केवल उनके स्वयं के लिए बल्कि दूसरे व्यक्तियों के लिए भी जानलेवा साबित हो सकती है।

कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल का किसान आंदोलन को लेकर बयान, बोले- कोर्ट ने बनाई कमेटी किसान भाई रखे संयम

रोहतक। किसान आंदोलन के एक बार फिर से सक्रिय होने पर कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल का बड़ा बयान सामने आया है। विपुल गोयल ने किसानों से संयम रखने की अपील की है । उन्होंने कहा कि यह मामला कोर्ट में है यहां तक की कोर्ट ने कमेटी भी बनाई हुई है। हरियाणा सरकार देश में सबसे ज्यादा एमएसपी देने वाला राज्य है। उन्होंने जल्द ही निकाय चुनाव होने की भी उम्मीद जताई है विपुल गोयल आज रोहतक में कार्यक्रम में पहुंचे थे।

प्रदेश में एक बार फिर से किसान आंदोलन की शुरुआत होने लगी है, ऐसे में तमाम नेता किसानों पर बयान देने से बचते हुए नजर आते हैं। रोहतक में एक कार्यक्रम में पहुंचे कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल ने तो किसानों को संयम रखने की अपील की है। विपुल गोयल ने कहा कि किसानों के लिए कोर्ट में कमेटी बनाई गई थी और उसी अनुसार किसानों को काम करना चाहिए।

गोयल ने कहा कि हरियाणा प्रदेश देश का सबसे पहला ऐसा राज्य है जो 20 फसलों पर किसानों को एमएसपी की गारंटी देता है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार किसानो की सच्ची हितेषी सरकार है इसलिए किसी के बहकावे में न आकर किसान संयम से काम ले।

विपुल गोयल ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर निशाना साधा उन्होंने कहा कि भूपेंद्र सिंह हुड्डा को जनता आईना दिखा चुकी है। ऐसे में उनके पास कोई मुद्दा नहीं बचा है , जिस तरह से भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा था कि सरकार ऐसी फसलों पर एमएसपी दे रही है । हरियाणा में पैदा ही नहीं होती इस सवाल के जवाब पर विपुल गोयल ने कहा बेवजह मामले को तूल दिया जा रहा है जबकि सरकार किसान हितेषी है। उन्होंने राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा के किसान आंदोलन में आए किसानों को नशेड़ी बताने पर भी प्रतिक्रिया दी उन्होंने कहा कि उनके बयान को मैंने नहीं सुना है और ना ही इस पर कोई प्रतिक्रिया दी जा सकती है। विपुल गोयल ने प्रदेश में जल्द ही नगर निगम व निकाय चुनाव होने की बात कही है उन्होंने कहा कि सरकार इसके लिए पूरी तरह से तैयार है।

किसानों के दिल्ली कूच पर अनिल विज ने दी प्रतिक्रिया, कहा- सुप्रीम कोर्ट की बात मानें किसान

अंबाला । हरियाणा-पंजाब के शंभू बॉर्डर से आज किसान एक बार फिर दिल्ली के लिए कूच करने वाले हैं। इस पर हरियाणा के कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि किसानों की चर्चा सुप्रीम कोर्ट से चल रही है और सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा कि किसानों के साथ जो चर्चा चल रही है वह ठीक ट्रैक पर है। उसके लिए हमें थोड़ा समय चाहिए और किसानों को थोड़े समय के लिए अपना आंदोलन स्थगित कर देना चाहिए। विज ने कहा कि मुझे लगता है कि किसानों को सुप्रीम कोर्ट की बात मान लेनी चाहिए।

वहीं कांग्रेसी सांसद प्रियंका गांधी ने ब्यान दिया था कि मोदी को संविधान समझ नहीं आया, यह कोई संघ की किताब नहीं है। इस पर भी विज ने टिप्पणी करते हुए कहा कि जो कांग्रेसी संविधान की लाल किताब लिए घूम रहे हैं वो आपातकाल में तत्काल प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संविधान को छलनी किया था। इस किताब पर उस खून का रंग है, संविधान कि आत्मा के साथ छेड़छाड़ की गई थी। बाबा साहेब ने जो संविधान बनाया उसमें धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद शब्द नहीं था। बाबा साहब भी ये शब्द लिख सकते थे लेकिन उन्होंने नहीं लिखा। उस वक्त की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने संविधान के मूल भाव को बदल दिया और संविधान जख्मी हुआ है, उस पर संविधान का खून लगा हुआ है।

कभी सुरेंद्र सिंह के सारथी रहे सुरेंद्र अहलावत के शामिल होने से हरियाणा में 'आप' होगी मजबूत

चंडीगढ़। हरियाणा में जनता की ओर से कांग्रेस को नकारे जाने के बाद अब राजनेता सरकार के विकल्प और अपने राजनीतिक भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए एक नए दल की तलाश कर रहे हैं। ऐसे में आम आदमी पार्टी इस प्रकार के नेताओं के लिए एक विकल्प बनकर सामने आई है। भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ चुके पानीपत के सुरेंद्र अहलावत ने भी आम आदमी पार्टी में शामिल होकर अपनी नई राजनीतिक पारी की शुरूआत की है। अहलावत के आप में आने से पार्टी को हरियाणा में पहले से अधिक मजबूती मिलेगी। भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर चुनाव लड़ने के अलावा सुरेंद्र अहलावत बीजेपी में कई अहम पदों पर भी जिम्मेदारी निभा चुके हैं। इसके अलावा वह चौधरी बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी में भी अहम भूमिका निभा चुके हैं। सुरेंद्र अहलावत वर्ष 2000 में समालखा से पंचायती प्रत्याशी के रूप में भी विधायक का चुनाव लड़ चुके हैं। उस समय उन्हें 18 हजार के करीब वोट हासिल हुई थी।

बंसीलाल के बेटे सुरेंद्र सिंह के थे खास !

समालखा से आजाद प्रत्याशी और पानीपत ग्रामीण से बीजेपी की टिकट पर चुनाव लड़ चुके सुरेंद्र अहलावत की प्रदेश के कगईं ग्रामीण इलाकों में अच्छी पकड़ है। चौधरी बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी में भी सुरेंद्र अहलावत काफी महत्वपूर्ण भूमिका में थे। वह चौधरी बंसीलाल के बेटे सुरेंद्र सिंह के राइटहैंड माने जाते थे। बंसीलाल और सुरेंद्र सिंह की ग्रामीण इलाकों पर अच्छी पकड़ थी। उनके साथ रहते हुए सुरेंद्र अहलावत ने भी उनके गुर सीखे और उस पर अमल करते हुए प्रदेश के कईं ग्रामीण इलाकों में अपनी पकड़ मजबूत करने का काम किया। अब चूंकि वह आम आदमी पार्टी के नेता के रूप में अपनी नई राजनीतिक पारी की शुरूआत कर चुके हैं। ऐसे में प्रदेश के कईं ग्रामीण इलाकों में आम आदमी पार्टी को मजबूती मिलने से इंकार नहीं किया जा सकता।

'आप ही एकमात्र विकल्प बचा'

सुरेंद्र अहलावत ने कहा कि जनता के हित में काम करने के लिए अब आम आदमी पार्टी ही एकमात्र विकल्प बचा है। उन्होंने हरियाणा के विकास की जिम्मेदारी केवल अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आप पर डाली और कहा कि केवल आम आदमी पार्टी ही जन विरोधी सरकार को हराने का दम रखती है। उन्होंने सर्व जातीय जन पंचायत के सभी सदस्यों के विचार-विमर्श के बाद ही आम आदमी पार्टी में शामिल होने का फैसला लिया था। अहलावत ने कहा कि कांग्रेस हरियाणा में इस जनविरोधी सरकार का मुकाबला करने में असमर्थ रही है। जनता के आह्वान और लोगों की मांग के अनुसार जन आवाज को बुलंद करने के लिए एक राजनीतिक फ्रंट की जरूरत थी, जो इस जन विरोधी सरकार का विकल्प बन सके। इसलिए सभी साथियों से विचार करने के बाद जनता की लड़ाई को मजबूती से लड़ने के लिए आम आदमी पार्टी में शामिल होने का फैसला लिया, जिससे हर फ्रंट और हर मोर्चे पर आमजन की लड़ाई को लड़ा जा सके। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में आम आदमी पार्टी हरियामा में जनविरोधी सरकार की नीतियों का विरोध करते हुए इस सरकार को परास्त करने का काम करेगी। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश के सभी राजनीतिक लोगों की सोच है कि हरियाणा से बीजेपी की जनविरोधी सरकार को को परास्त करने के लिए अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में हरियाणा में केवल आम आदमी पार्टी ही एकमात्र विकल्प है। यहीं कारण है कि आज प्रदेश के सभी राजनीतिक लोग आम आदमी पार्टी की ओर आशा भरी नजरों से देख रहें हैं।

कईं चुनावों में निभाई अहम जिम्मेदारी

इस दौरान आप के प्रदेश अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने बताया कि सुरेंद्र अहलावत भारतीय जनता पार्टी में कईं पदों पर कार्य कर चुके हैं। वह बीजेपी के प्रदेश मीडिया सह प्रभारी, प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य, करनाल लोकसभा चुनाव के सह प्रभारी, पानीपत ग्रामीण लोकसभा चुनाव के प्रभारी रह चुके हैं। इसके अलावा 2009 में बीजेपी की टिकट पर पानीपत ग्रामीण से विधानसभा चुनाव भी लड़ चुके हैं।

हरियाणा में महिलाओं को कब से मिलेंगे प्रति महीना 2100 रूपए, सीएम सैनी ने दिया ये जबाव

चंडीगढ़ । दिल्ली सरकार ने महिलाओं के लिए योजना का ऐलान कर दिया है। इसके बाद अब हरियाणा में भी ये सवाल उठने शुरू हो गए हैं कि बीजेपी ने घोषणापत्र में महिलाओं को 2100 रुपये देने का जो वादा किया था। उसे हरियाणा सरकार कब पूरा करेगी। इसको लेकर सीएम सैनी ने जवाब दिया है कि जल्दी ही हम हरियाणा की महिलाओं को 2100 रुपये देने का काम करेंगे।

महिलाओं को जल्द मिलेगा 2100 रुपए – सीएम नायब सैनी ने कहा कि अब जो बजट सत्र आएगा उसमें हम इसको लेकर प्रावधान कर देंगे। उसके बाद महिलाओं को 2100 रुपये मिलना शुरू हो जाएंगे। इस दौरान सीएम ने कहा कि जब मैं सांसद था तो लोग मेरे पास आते थे और डायलिसिस के लिए सरकारी अस्पतालों में सिफारिश के लिए कहते थे। कई तो ऐसे थे जो मुझ तक पहुंच भी नहीं सकते थे। इसलिए हमने सरकार बनते ही हरियाणा के सभी अस्पतालों में डायलिसिस की सुविधा सभी के लिए फ्री कर दी। इसके अलावा युवाओं को नौकरी के सवाल पर सीएम सैनी ने कहा पिछली सरकार में बिना पर्ची और खर्ची के नौकरी नहीं लगती थी, लेकिन हमारी सरकार ने बिना पर्ची–खर्ची के युवाओं को नौकरी देने का काम किया है।

कुमारी सैलजा ने उठाई सिरसा और फतेहाबाद के एंट्री प्वाइंट दुरुस्त करने की मांग

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, उत्तराखंड की प्रभारी, पूर्व केंद्रीय मंत्री व सिरसा लोकसभा से सांसद कुमारी सैलजा ने केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को पत्र लिख कर सिरसा व फतेहाबाद के एंट्री प्वाइंट दुरुस्त करने की मांग है। इसके साथ ही राजमार्ग पर 61 करोड़ की लागत से बनाए गए नाले की निष्पक्ष जांच कराने की भी मांग की गई है। उन्होंने पत्र के माध्यम से केंद्रीय सडक परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को बताया है कि हरियाणा के हिसार-सिरसा चार मार्गीय मार्ग पर सिरसा व फतेहाबाद के एंट्री प्वाइंट पर लाइटों का प्रबंध करने और संकेतक लगाए जाने की मांग की है।

उन्होंने बताया कि हिसार-सिरसा चार मार्गीय एनएच-10 पर फतेहाबाद नगर स्थित है। जब यात्री हिसार से फतेहाबाद और फतेहाबाद से सिरसा नगर में प्रवेश करते है तो इस मार्ग पर पहली बार आने वाले यात्रियों को खासकर रात में परेशानी का सामना करना पड़ता है, इन दोनों ही एंट्री प्वाइंटों पर लाइट का कोई प्रबंध नहीं है और न ही किसी प्रकार के संकेतक लगे हुए है।

ऐसे में यात्री वाहन गलत दिशा में चले जाते है या सीधे हाईवे पर चढ़ जाते है, सिरसा में प्रवेश करने वाला यात्री वाहन डबवाली की ओर चला जाता है, इसी प्रकार फतेहाबाद वाले वाहन भी गलत दिशा में चले जाते है। इसके अतिरिक्त, हिसार से डबवाली के बीच मुख्य-मुख्य कस्बों व गांवों के पास करीब 41 किमी लंबा नाला दोनों तरफ बनाया गया है जिस पर 61 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।

नाला की स्लैब टूट जाने के कारण वह वर्तमान में अनुपयोगी है। साथ ही बारिश के पानी की निकासी के नाम पर जो करोड़ों रुपये बर्बाद कर दिए हैं इसकी भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। उन्होंने केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से पत्र के माध्यम से आग्रह किया है कि इन दोनों स्थानों पर लाइट का उचित प्रबंध किया जाए साथ ही संकेतक भी लगाए जाएं और नाले की मरम्मत कर नाले के पानी की निकासी का उचित प्रबंध किया जाए, जिससे यात्रियों और स्थानीय लोगों को परेशानियों का सामना न करना पड़े।

किसानों पर आंसू गैस के गोले चलाने की बजाय उनकी मांगों को पूरा करे सरकार

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, उत्तराखंड की प्रभारी, पूर्व केंद्रीय मंत्री व सिरसा लोकसभा से सांसद कुमारी सैलजा ने केंद्र सरकार से मांग की है कि किसानों की मांगों को मान कर राहत दी जाए। उन्होंने कहा

कि किसान अपनी मांगों को लेकर लंबे समय से आंदोलन कर रहे हैं पर सरकार द्वारा उनकी मांगों को मानने की जगह उन पर आंसू गैस के गोले व डंडे बरसाए जा रहे हैं। किसानों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करना उचित नहीं है। कुमारी सैलजा ने केंद्र सरकार से मांग की है कि किसानों की मांगों को पूरा किया जाए ताकि उनको आंदोलन करने की जरूरत ही न पड़े।

थूक जिहाद का आरोपी शमीम गिरफ्तार :अनूपशहर सब्जी मंडी की वायरल हुई थी वीडियो,बोले भाजपा नेता ;- मूत्र और थूक जिहाद वालो का समाज करें बहिष्कार

पोषित कुमार(आज का मुद्दा) अनूपशहरः दिन शुक्रवार को अनूपशहर मे सब्जी विक्रेता शमीम की सब्जियों पर थूकते हुए एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुई थी। जिसमें आरोपी समीम सब्जियों पर दो से तीन बार थूकते हुए नजर आ रहा है। वायरल वीडियो अनूपशहर सब्जी मंडी की बताई जा रही है। हालांकि, इस वायरल वीडियो की आज का मुद्दा पुष्टि नहीं करता। वीडियो वायरल होने के पश्चात पुलिस- प्रशासन में हड़कंप मच गया। दिन शनिवार को कस्बा इंचार्ज राकेश सिंह की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने आरोपी सब्जी विक्रेता के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

अब समझिए पूरा मामला

कस्बा इंचार्ज राकेश सिंह ने दी तहरीर में बताया कि कस्बा निवासी सब्जी विक्रेता शमीम की सब्जियों पर थूकते हुए एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुई। वायरल वीडियो की जांच करने पर पता चला कि आरोपी सब्जी विक्रेता कस्बा निवासी है तथा द्वेष पूर्ण भावना के साथ वह सब्जी पर थूक रहा है। जो की खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम का उल्लंघन है साथ ही सब्जी खरीदने वाले ग्राहकों के जीवन के लिए संकट पूर्ण है। वहीं कोतवाली पुलिस ने सिटी इंचार्ज राकेश सिंह की तहरीर पर सुसंगत धाराओं में आरोपी सब्जी विक्रेता समीम के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। वही सब्जी विक्रेता शमीम के इस द्वेष पूर्ण कार्य के पश्चात हिंदूवादी संगठन के कार्यकताओं में भारी आक्रोश व्याप्त है।**मूत्र और थूक जिहाद वालो का समाज करें बहिष्कार-भाजपा नेता**

वही इस पूरे मामले में कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा नेता एवं मंडल प्रभारी जहांगीराबाद अभय गर्ग ने कहा कि योगी सरकार में मूत्र एवं थूक जिहाद की मानसिकता वाले लोगों के खिलाफ पुलिस प्रशासन द्वारा कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने मुस्लिम समाज से मूत्र एवं थूक जिहाद वाले व्यक्ति का बहिष्कार करने की भी अपील की।

क्या बोले अधिकारी

इस संबंध में क्षेत्राधिकार अनूपशहर गिरजा शंकर त्रिपाठी ने बताया कि कस्बा इंचार्ज राकेश सिंह की तहरीर पर आरोपी सब्जी विक्रेता शमीम के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनाए जाने के संबंध में डीएम ने ली बैठक

अलीगढ़ 14 दिसंबर 2024 (सू0वि0) : प्रदेश सरकार ने किसानों के लिए फॉर्मर रजिस्ट्री आईडी को अनिवार्य कर दिया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा, कृषि ऋण एवं अन्य योजनाओं का लाभ लेने वाले किसानों को अब हरहाल में फॉर्मर रजिस्ट्री आईडी बनवाना ही होगा। किसानों के लिए आवश्यक है कि जल्द से जल्द फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनवा लें, इसकी प्रक्रिया काफी सरल एवं सुलभ है।

उक्त जानकारी जिलाधिकारी विशाख जी0 ने दी है। वह शनिवार को फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनाए जाने के संबंध में एसडीएम, बीडीओ और तहसीलदार के साथ ही कृषि एवं राजस्व विभाग के अन्य अधिकारियों कर्मचारियों के साथ वर्चुअल बैठक कर रहे थे। उन्होंने कहा कि फार्मर रजिस्ट्री आईडी किसान चार प्रकार से बनवा सकते हैं। यह प्रक्रिया काफी आसान भी है। डीएम ने सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं बीडीओ को निर्देशित किया कि 15 दिसंबर से 4 जनवरी के मध्य रोस्टर तैयार करते हुए शिविर के माध्यम से किसानों की फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनाया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने इसके लिए पंचायत एवं रोजगार सहायकों की मदद लिए जाने, शिविर स्थापना की तिथि निर्धारित कर व्यापक प्रचार प्रसार करने, पंचायती राज विभाग को विभिन्न माध्यमों से ग्राम में मुनादी कराए जाने और शिविर के माध्यम से हो रहे कार्यों का पर्यवेक्षण भी कराए जाने के निर्देश दिए हैं। मुख्य विकास अधिकारी प्रखर कुमार सिंह ने फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनाए जाने के संबंध में बताया कि फार्मर रजिस्ट्री आईडी को चार तरीके प्रथम किसान स्वयं से, दूसरा सीएससी माध्यम से, तीसरा सहायक मोड से और चौथा शिविर स्थापना के माध्यम से बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा कार्य शिविर मोड पर ही हुए हैं, इसलिए जिले में भी शिविर स्थापना करते हुए फार्मर आईडी बनाई जाएगी ताकि केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ वास्तविक किसानों को प्राप्त हो सके।

मुख्य विकास अधिकारी प्रखर कुमार सिंह ने किसान बंधुओ से अपील करते हुए कहा है कि वह जल्द से जल्द व्यक्तिगत रुचि लेते हुए फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनवा लें ताकि आने वाले समय में सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ उनको प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि यदि किसान फार्मर रजिस्ट्री आईडी नही बनवाते हैं तो वह दिसंबर या उसके बाद के माह में आर्थिक सहायता राशि से वंचित हो जाएंगे। उन्होंने सभी एसडीएम से बारी-बारी तहसील वार प्रगति का जायजा लेते हुए बताया कि फार्मर आईडी बनाए जाने में जिले में अभी काफी कार्य किया जाना शेष है। संबंधितों को प्रशिक्षण भी दिया जा चुका है। सीडीओ ने बताया कि किसान "फार्मर रजिस्ट्री यूपी" एप पर जाकर स्वयं भी फार्मर रजिस्ट्री आईडी बना सकते हैं। इसके साथ ही सहायक मोड़ से किसान पंजीकरण कर "ऑपरेटर यूपी फार्मर रजिस्ट्री एप" के माध्यम से

अपनी आईडी बनवा सकते है। कॉमन सर्विस सेंटर एवं लगाए जा रहे कैम्प के माध्यम से भी किसान अपनी फार्मर रजिस्ट्री आईडी बना सकते हैं।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 137120 राजस्व वादों का हुआ निस्तारण

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा बहराइच यूपी

बहराइच 14 दिसम्बर। राष्ट्रीय लोक अदालत सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं मा. उ.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निदेशानुसार आयोजित राष्ट्रीय लोक सेवा अदालत के अवसर पर राजस्व/अन्य न्यायालय द्वारा कुल 137120 वादों का निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी मोनिका रानी द्वारा लोक अदालत के अवसर पर राजस्व, चकबन्दी व सरफेसी एक्ट से सम्बन्धित 01-01 वाद का निस्तारण किया गया तथा स्टाम्प से सम्बन्धित 03 वादों में रू. 07 लाख 96 हजार 600 की धनराशि जमा करायी गयी। राष्ट्रीय लोक अदालत को अत्यधिक सफल अत्यधिक सफल बनाने हेतु जिलाधिकारी व नगर मजिस्ट्रेट/नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय लोक अदालत, बहराइच शालिनी प्रभाकर द्वारा समस्त पीठासीन अधिकारियों, विद्वान अधिवक्ताओं आदि को धन्यवाद ज्ञापित किया गया है।

एसपी ने गढ़ थाने का किया औचक निरीक्षण, व्यवस्थाओ का लिया जायजा

हापुड़। एसपी कुंवर ज्ञानंजय सिंह नें गढ़मुक्तेश्वर तीर्थ नगरी के थाने मेंशनिवार को निरिक्षण करने पहुंच गए।इस दौरान उन्होंने पूरे थाने का निरीक्षणकिया और गढ एसएचओ नीरज कुमार से बातचीत की और दिशा निर्देश दिए। उसके बादउन्होंने थाने में तैनात जांच अधिकारियों से बातचीत कर पेंडिंग केसों केबारे जानकारी ली और जल्द से जल्द सभी केसों नो निपटाने के आदेश भी दिए औरसभी कर्मचारियों को कहा कि थाने में आने वाले शिकायतकर्ताओ में सहयोग करें। बतादें कि एसपी नें आकस्मिकनिरीक्षण किया और थाने के रिकॉर्ड को भीखंगाला।जिसमें मासिक कार्य विवरणी, मालखाना, चार्जशीट, स्टेशन डायरी समेतअभिलेखों की जांच की साथ ही हत्या, लूट, डकैती, जैसी संगीन आपराधिक घटनाएं वलंबित मामलों को लेकर कई आवश्यक निर्देश दिय।पुलिस पदाधिकारियों कोआपराधिक घटनाओ में फरार अभियुक्तों की शीघ्र गिरफ्तारी करने, वाहन चेकिंग, रात्रि गश्ती, बैंक एटीएम की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर चौकस रहने कानिर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने थाने के प्रागण में बैठकर फाईलेदेखी। उन्होंने सभी को निर्देश देते हुए कहा कि शिकायकताओं को किसी तरहकी दिक्कत नहीं आनी चाहिए। उनकी समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए, तुरंतसमाधान होना चाहिए। करीब डेढ़ घण्टे तक वह थाने में मौजूद रहे है और वहींस्थानीय स्तर पर अवैध शराब निर्माण की सूचना थाने तक पहुंचाने कीजिम्मेवारी चौकीदारों की होगी। चौकीदार इस कार्यवाही में जुट कर पुलिस कोसूचना दें, ताकि पुलिस क्षेत्र में छापेमारी कर अवैध शराब की बिक्री पररोकथाम लगा सके ।उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि आपराधिक घटनाओं पररोकथाम के लिए सघन छापेमारी अभियान चलाया जाएगा। वहीं क्षेत्र में विशेषचौकसी रखने का निर्देश दिया। ताकि गंगा के खादर क्षेत्र शराब तैयार करनेवाले अपराधियों को पकड़ा जा सके।

जिला न्यायालय पंचकूला और उप-मंडल न्यायालय कालका में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

पंचकूला 15 दिसम्बर -(शशि किरण अरोड़ा) - आज का मुद्दा-- मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट और सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए),अजय कुमार घनघस ने बताया कि जिला एवं सत्र न्यायाधीश वी.पी. सिरोही के मार्गदर्शन में जिला न्यायालय पंचकूला और उप-मंडल न्यायालय कालका में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। लम्बित मामलों को सौहार्दपूर्ण समझौते के माध्यम से हल करने के उद्देश्य से जिला न्यायालय पंचकूला में छह बेंच और उप-मंडल न्यायालय कालका में एक बेंच का गठन किया गया। वी.पी. सिरोही ने बताया कि बेंचों ने विभिन्न श्रेणियों के मामलों की सुनवाई की, जिनमें सिविल विवाद, आपराधिक समझौता योग्य मामले, पारिवारिक विवाद, ट्रैफिक चालान, परक्राम्य लिखत अधिनियम की धारा 138 के तहत चेक बाउंस के मामले और समझौते के लिए अन्य मामले शामिल थे।

वादियों और आम जनता की सुविधा के लिए जिला न्यायालय और उपायुक्त कार्यालय परिसर में हेल्प डेस्क स्थापित किए गए। इन हेल्प डेस्कों पर प्रशिक्षित पैरा लीगल वालंटियर्स (पीएलवी) तैनात थे, जिन्होंने आगंतुकों को लोक अदालत प्रक्रिया के बारे में मार्गदर्शन दिया, उन्हें आवश्यक दस्तावेज तैयार करने में सहायता की और उनके मामलों की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान की।

इसके अतिरिक्त, ट्रैफिक चालान शाखा और सेक्टर-8, पंचकूला में एसबीआई बैंक शाखा में भी हेल्प डेस्क स्थापित किए गए, ताकि अपने मामलों को हल करने के इच्छुक लोगों के लिए व्यापक पहुंच और सुविधा सुनिश्चित की जा सके। वी.पी. सिरोही ने वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र को बढ़ावा देने, अदालतों पर बोझ कम करने और विवाद निपटान की लागत प्रभावी, समय बचाने वाली और सामंजस्यपूर्ण विधि प्रदान करने में लोक अदालतों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता सुनिश्चित करने में न्यायिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, अदालत के कर्मचारियों और स्वयंसेवकों के समन्वित प्रयासों की सराहना की। लोक अदालत में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे, तथा अनेक मामलों का मौके पर ही सफलतापूर्वक निपटारा किया गया, जिससे वादियों को राहत मिली तथा त्वरित न्याय के लक्ष्य में योगदान मिला। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अजय कुमार घनघस ने सभी हितधारकों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए आभार व्यक्त किया तथा जनता से भविष्य में ऐसे मंचों का लाभ उठाने का आग्रह किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने समाज के सभी वर्गों के लिए न्याय सुलभ बनाने तथा शांतिपूर्ण विवाद समाधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की है।

पति ने पत्नी का गला रेतकर उतारा मौत के घाट, आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस

हापुड़। जनपद हापुड़ के बाबूगढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम मुक्तेश्वर में पति नेधारदार हथियार से पत्नी की गर्दन काटकर हत्या कर दी। हत्यारोपी पति मौकेसे फरार हो गया। मौके पर काफी संख्या में ग्रामीण एकत्र हो गए। सूचना मिलनेपर पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर मामले कीजांच शुरू कर दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के अनुसार शनिवार सुबह को ग्राम मुक्तेश्वर निवासी रमेश और उसकीपत्नी संगीता के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गयाकि रमेश ने पत्नी संगीता के गर्दन पर धारदार हथियार से वार कर दिया। जिससेमौके पर ही उसकी मौत हो गई। हत्याकांड के बाद आरोपी पति फरार हो गया।हत्याकांड की सूचना मिलते ही गांव में अफरा तफरी मच गई। ग्रामीण तुरंत मौकेपर पहुंचे और हत्याकांड के संबंध में पुलिस को सूचना दी। हत्याकांड की सूचना मिलते ही अपर पुलिस अधीक्षक विनीत भटनागर,

सीओजितेंद्र कुमार शर्मा, थाना प्रभारी विजय गुप्ता पुलिस टीम के साथ मौके परपहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर मामले की जानकारी की। बताया गया किमृतका के चार बच्चे लवी 16 वर्षीय लवी, 11 वर्षीय छवि, आठ वर्षीय पुत्र वंशऔर दो वर्षीय पुत्र हर्ष है। दोनों पुत्रियां स्कूल गई थी। घटना के समयरमेश के पिता खेत पर गन्ने छिलने गए थे जबकि उसकी मां विमला घर पर थी जोसही से देख नहीं पाती है और सुन भी नहीं पाती है। अपर पुलिस अधीक्षक विनीत भटनागर ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिएभेज दिया है। पति पत्नी के बीच विवाद का मामला फिलहाल सामने आया है। जल्दही हत्यारोपी पति को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

अनूपशहर में मनाया गया राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस :अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा के उपयोग एवं खपत पर हुई चर्चा

पोषित कुमार(आज का मुद्दा) अनूपशहर: डीपीबीएस महाविद्यालय में महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह के निर्देशन में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के उपलक्ष में एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन भौतिकी विभाग के द्वारा किया गया। एकदिवसीय सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह ने की। इस कार्यक्रम में डीपीबीएस महाविद्यालय, एलडीएवी इंटर कॉलेज एवं जेपी विद्या मंदिर की एनसीसी कैडेट्स ने प्रतिभागिता की। विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में ऊर्जा संरक्षण के उपायों पर अपने विचार उपस्थित किए ।भौतिकी विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक कैप्टन यजवेन्द्र कुमार ने बताया कि ग्रीन हाइड्रोजन, पानी को इलेक्ट्रोलिसिस प्रक्रिया के जरिए नवीकरणीय बिजली से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में तोड़कर बनाई जाती

है. इस प्रक्रिया में बहुत कम या कोई कार्बन उत्सर्जन नहीं होता. ग्रीन हाइड्रोजन, पृथ्वी पर सबसे ज्यादा पाए जाने वाले तत्वों में से एक है और यह स्वच्छ वैकल्पिक ईंधन का विकल्प है. ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में ग्रीन हाइड्रोजन का महत्वपूर्ण स्थान है अन्य ऊर्जा उपाय जहां हमारे पर्यावरण को दूषित करते हैं वही ग्रीन हाइड्रोजन हमारे पर्यावरण को बिल्कुल भी प्रदूषित नहीं करती है।

इन लोगों की रही उपस्थिति

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा के उपयोग एवं खपत पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को छोटे-छोटे उपायों द्वारा ऊर्जा के संरक्षण हेतु प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में जेपी विद्या मंदिर से ममता चौधरी, एलडीएवी इंटर कॉलेज से धर्मेंद्र राजोरा, साहिल चौधरी इत्यादि प्राध्यापक उपस्थित रहे

बरेली जनपद के आंवला तहसील में सम्पन्न हुई स्वाभिमानी भारत विकास संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

(डॉ. गोपाल चतुवेर्दी) आंवला (बरेली)/मथुरा। आँवला तहसील के सरगम रिजॉर्ट में स्वाभिमानी भारत विकास संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक आवश्यक बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट माण्डवी नित्यानंद वशिष्ठ के मार्गदर्शन एवं संत नित्यानंद महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में अपने विचार व्यक्त करते हुए संघ की राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट माण्डवी वशिष्ठ ने कहा कि नई पीढ़ी को भारतीय परम्पराओं के साथ आधात्मिक चिंतन से राष्ट्रीय चिंतन एवं समाज के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारियों को समझना होगा और बिना किसी दिखावे के अंतःकरण की पवित्रता के साथ मानव, जीव, जन्तु वृक्ष, पर्यावरण आदि विषय में निज स्वार्थ से परे होकर एक दूसरे के दुख-सुख में खड़े होना एवं यथा संभव उसके समाधान में रूचि लेना अथवा उसकी सूचना संघ के केंद्रीय कार्यकारिणी को अवगत कराना ऐसे तमाम बिंदुओं पर चर्चा हुई। साथ ही प्रति माह की द्वितीय

एकादशी को संध्या कालीन श्रीहरिनाम संकीर्तन करते हुए एक घंटे की रैली के दौरान नगर भ्रमण में बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना एवं संस्कार सृजन की प्रेरणा लेने का संकल्प लिया गया। तत्पश्चात संघ में सर्वसम्मति से एक विशेष प्रस्ताव पारित हुआ। जिसमें जिला स्तरीय के कार्यक्रमों की सुविधा के लिए बैंक खाता खोलने पर मुहर लगाई गई। बैठक में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय निदेशक बिहारी लाल वशिष्ठ, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुवेर्दी, करण कृष्ण गोस्वामी, आचार्य ईश्वरचंद्र रावत, कृष्ण कन्हैया पदरेणु महाराज ,विष्णु शर्मा, श्रीमती सरोज गोला, जिला बरेली आवंला की बैठक में संघ उपाध्यक्ष विनीत शर्मा, सचिव योगेश माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष रानू अग्रवाल, मीडिया प्रभारी अखिलेश गुप्ता, मुख्य सचिव सोमेश प्रजापति, जिला समन्वयक अर्पित त्रिपाठी, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती शोभना अग्रवाल, श्रीमती विनीता शर्मा, खुशी, प्राची आदि की उपस्थिति विशेष रही।

भाजपा संगठन चुनाव के लिए मंडल अध्यक्ष बृजेश निषाद को सर्वसम्मति चुना गया

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा

भाजपा मंडल संगठन चुनाव के लिए लिए चुनाव अधिकारी सुनील श्रीवास्तव, की उपस्थिति में मंडल अध्यक्ष का चुनाव कराए। जिसमें पूर्व मंडल अध्यक्ष ब्रजेश निषाद को इस वर्ष सभी पार्टी के कार्यकताओं द्वारा चुनाव होने पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। मंडल अध्यक्ष बृजेश निषाद पुनः मंडल अध्यक्ष के पदाधिकारी चुनें गए। मंडल अध्यक्ष बृजेश निषाद ने बताया कि पूर्व में जिस तरह काम करते आया हूं इसी तरह सम्मान के आगे भी कार्य करुंगा इस, अवसर पर भाजपा मंडल महामंत्री रानावीर सिंह, प्रहलाद राय, भगौती चौहान,

ब्रजनंदन, श्याम सुंदर तिवारी, राम चन्द्र चौहान, राजेन्द्र मौर्य, राजेन्द्र यादव, राकेश पाण्डेय, उमेश यादव, राकेश आर्य, समेत ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग उपस्थित होकर मंडल अध्यक्ष पद के लिए बृजेश निषाद को सर्वसम्मति चुना गया मंडल राम गांव के भाजपा कार्यकताओं को बहुत बहुत हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी

वहीं रिसिया मंडल के नये युवा अध्यक्ष चुने गए

रिसिया नगर के सरस्वती नगर मोहल्ले के चरसिया बाबा कुट्टी पर भाजपा मंडल संगठन चुनाव के लिए चुनाव अधिकारी चंद्र भान सिंह उर्फ संचित सिंह की मौजूदगी में बैठक की गई बैठक में मंडल अध्यक्ष पद के लिए एक फॉर्म अरविंद गुप्ता का आया था दूसरा कोई फॉर्म नहीं आया था सर्व सम्मति से अरविंद गुप्ता को मंडल अध्यक्ष के लिए चुना गया इस मौके पर चुनाव अधिकारी ने घोषणा करते हुए कहा कि सर्व सम्मति से अरविंद गुप्ता मंडल अध्यक्ष के लिए चुना गया है इसकी सूचना जिला अध्यक्ष को दी जाएगी जिला।

भाजपा मंडल चुनावी बैठक में पूर्व मंडल अध्यक्ष हेमंत वर्मा प्रमुख प्रतिनिधि संजय जैसवाल, पूर्व चेयर मैन राजेश निगम डा 0 राजू निगम, मंजू गुप्ता, जय प्रकाश अग्रहरी,कमलेश आर्य, रमा शंकर सिंह, महेश अग्रवाल,आशीष सिंह सभासद, अशोक शर्मा सरोज शर्मा प्रेम वर्मा जिला जीत तिवारी समेत तमाम पदाधिकारी मौजूद रहे ।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 146489 वादों का हुआ निस्तारण

ब्यूरो रिपोर्ट दिलशाद अहमद आज का मुद्दा

बहराइच 14 दिसम्बर। मा. राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं मा. उ.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निदेशानुसार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बहराइच के अध्यक्ष/जनपद न्यायाधीश उत्कर्ष चतुवेर्दी के कुशल नेतृत्व में आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में 01 लाख 46 हजार 489 वादों का निस्तारण किया गया। राष्ट्रीय लोक अदालत में जिला न्यायालय द्वारा 8217 वाद, प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय, बहराइच संजय कुमार-तृतीय की अध्यक्षता में पारिवारिक मामलों के 22 वाद, पीठासीन अधिकारी, मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, बहराइच संजीव कुमार त्यागी द्वारा 50 वादों तथा जिला उपभोक्ता प्रतितोश आयोग, बहराइच के अध्यक्ष सुरेश चन्द्र भारती द्वारा 16 वादों का निस्तारण किया गया। राष्ट्रीय लोक अदालत में बैंक रिकवरी के 1063 मामले तथा राजस्व के 137120 वादों का निस्तारण किया गया। राष्ट्रीय लोक अदालत में सेटेलमेन्ट की कुल धनराशि रू. 10 करोड़ 21 लाख 76 हजार 161 रही।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बहराइच के सचिव विराट शिरोमणि द्वारा अवगत कराया गया कि न्यायालय परिसर में जगह-जगह पर हेल्पडेस्क बनाये गये। हेल्पडेस्क पर पराविधिक स्वयं सेवकों द्वारा न्यायालय में उपस्थित वादकारियों को आवश्यक सहायता प्रदान की गयी। सचिव श्री शिरोमणि द्वारा राष्ट्रीय लोक अदालत को अत्यधिक सफल बनाने हेतु समस्त पीठासीन अधिकारियों, विद्वान अधिवक्ताओं, बैंक अधिकारियों, कर्मचारियों, वादकारियों एवं पुलिस फोर्स का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

नोएडा में शिक्षा और सामाजिक सेवा का जश्न

नोएडा। नोएडा के जेजे कॉलोनी, सेक्टर-5 हरोला में ऋषि चैरिटेबल ट्रस्ट ने अपना दूसरा स्थापना दिवस उत्साह और समर्पण के साथ मनाया। भारती नेगी की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में सामाजिक सेवा और शिक्षा के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता को विशेष रूप से दशार्या गया।

कार्यक्रम की शुरूआत पूजा और हवन से हुई, जिसके बाद केक काटकर स्थापना दिवस का जश्न मनाया गया। भारती नेगी ने संस्थान के पिछले दो वर्षों में किए गए सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डाला और भविष्य में भी ट्रस्ट की सेवा की निरंतरता का आश्वासन दिया।भारती नेगी ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा ही सबसे बड़ा धन है। उन्होंने ऋषि चैरिटेबल ट्रस्ट के शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों को सराहनीय बताया।मुख्य अतिथियों ने ऋषि चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किए गए विविध सामाजिक कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर जरूरतमंद स्कूली छात्राओं को पुस्तकें वितरित की गईं, जो शिक्षा के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता को दशार्ता है।कार्यक्रम में संस्थापक भारती नेगी, जीएस नेगी, प्रीति, रीना, शाहिद फहीम अहमद, आरती, राखी, पूजा, लता सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। यह कार्यक्रम न केवल एक संस्था के स्थापना दिवस का प्रतीक था, बल्कि सामाजिक परोपकार की भावना का भी प्रतीक था।

स्वच्छ भारत प्रतियोगिता में अवार्ड वितरण कार्यक्रम में सम्मिलित हुई नगर पालिका परिषद दादरी की अध्यक्ष एवं अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता

आज का मुद्दा

नोएडा : नगर पालिका परिषद दादरी अध्यक्ष गीता शर्मा और अधिशासी अधिकारी शालिनी गुप्ता के द्वारा नगर पालिका परिषद दादरी कार्यालय प्रांगण में स्वच्छ वार्ड प्रतियोगिता में विजयी सभासदों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा आत्मनिर्भर वार्ड 11 के नगर वासियों को निःशुल्क होम कंपोस्टर का वितरण किया गया । स्वच्छ वार्ड प्रतियोगिता में कई बिंदुओं पर जांच की गई जिसमें वार्ड 13 प्रथम स्थान पर, वार्ड 11 द्वितीय स्थान पर, वार्ड 15 तृतीय स्थान पर रहा । अधिशासी अधिकारी महोदया द्वारा कार्यक्रम में आय सभी अतिथियों को होम कंपोस्टर को प्रयोग के बारे में बताया तथा इससे किस तरह खाद तैयार की जाए इस संबंध में भी जानकारी दी इसके उपरांत अध्यक्ष महोदया द्वारा सभी से आह्वाहन किया गया कि नगर पालिका के साथ मिलकर स्वच्छता के इस कार्यक्रम में सहयोग करें । इस अवसर पर रजनी चौधरी, आर के चौधरी, सनी रावल, सविता,(सभासद गण) , डॉ० रविन्द्र कुमार (एसबीए ग्रुप) , विपिन रुहेला,सोहराब, नरेंद्र सिंह राठौड़, आदि उपस्थित रहे ।

वरिष्ठ किसान नेता राजेंद्र यादव ने शंभू बॉर्डर,सिंधु बॉर्डर पर संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले धरना प्रदर्शन कर रहे किसानों के समर्थन में राष्ट्रपति के नाम नोएडा पुलिस को ज्ञापन सौंपा

(आज का मुद्दा ब्यूरो,राजा मौर्य)

[नोएडा] दिनांक 14/12/2024

भारतीय किसान संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र यादव ने महामहिम राष्ट्रपति के नाम एसीपी नोएडा द्वितीय स्वौया गोयल को ज्ञापन सौंपा इस मौके राजेन्द्र यादव ने कहा कि पिछले कुछ समय से अंबाला के शंभू बॉर्डर, जींद के खनौरी और सोनीपत के सिंघू पर संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले किसान धरना प्रदर्शन कर रहे हैं किसानों की प्रमुख मांगे एमएसपी के अलावा कर्ज माफी, किसानों और खेत मजदूरों के लिए पेंशन और बिजली दरों में बढ़ोतरी न करने की मांग कर रहे हैं। वे 2021 की लखीमपुर खीरी हिंसा के पीड़ितों के लिए न्याय, भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2013 को बहाल करने और 2020-21 में पिछले आंदोलन के दौरान मारे गए किसानों के परिवारों को मुआवजा दिए जाने की भी मांग कर रहे हैं। 13 महीने के आंदोलन के समाप्त होने पर जो वादे केंद्र सरकार ने किए थे उन्हें लागू करने की मांग कर रहे है। सरकार की तरफ से कोई सकारात्मक रुख नहीं दिखाया जा रहा है। वहीं लगभग पिछले 18 दिनों से आमरण अनशन बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल की हालत भी बहुत खराब हो रही है। वहीं पंजाब और हरियाणा सीमा के शंभू बॉर्डर से 101 किसानों के एक जत्थे ने शुक्रवार को दिल्ली के लिए पैदल मार्च शुरू किया लेकिन उन्हें कुछ मीटर बाद ही बैरिकेड्स लगाकर रोक दिया गया। हरियाणा पुलिस ने किसानों से आगे न बढ़ने को कहा और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (इठरर) की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू होने का हवाला दिया। सरकार का ये तानाशाही रवैया ठीक नहीं है भारतीय किसान संगठन मांग करता हूं कि सरकार आगे आए और किसानों से बात करे किसान भी इस देश का हिस्सा है इस मौके पर गौरव यादव,गुड्डू शर्मा, अशोक कुमार, रहीसुद्दीन, विष्णु तिवारी, मुकेश, चेतन आदि मौजूद रहे

धीरेन्द्र अवाना बने ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष

आज का मुद्दा-नोएडा।ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन ने आज अपने संगठन का विस्तार करते हुए गौतमबुद्ध नगर में नए जिलाध्यक्ष की नियुक्ति की है।इसकी घोषणा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवी प्रसाद गुप्ता ने नोएडा में वरिष्ठ पत्रकार धीरेन्द्र अवाना के आवास पर की। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार हाकिम सिंह ने की तथा संचालन प्रदेश कार्य समिति के सदस्य डॉक्टर नरेश सिंह ने किया।बैठक में संगठन के राष्ट्रीय सचिव नरेश सक्सेना ने कहा कि आज संगठन का विस्तार राष्ट्रीय अध्यक्ष देवी प्रसाद गुप्ता के नेतृत्व में हुआ।बैठक में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवी प्रसाद गुप्ता ने कहा कि संगठन का पत्रकारों की सुरक्षा, स्वाभिमान एवं सदाशयता के लिए सदैव काम करता है और विषम परिस्थिति के उनके साथ सदैव
खड़ा रहता है।इसी का परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश सहित अन्य प्रान्तों में भी पत्रकार एसोसिएशन का काम तेजी से बढ़ा है।1982 से शुरू हुयी
इस यात्रा में हमेशा पत्रकारों का हित का चिन्तन होता है। जिलाध्यक्ष धीरेन्द्र अवाना ने इस अवसर पर संगठन के नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुयी कहा कि जिले के प्रत्येक ब्लॉक और तहसील में संगठन विस्तार हेतु पूरा प्रयास करुँगा तथा पत्रकारों के हितों की रक्षा और उनके कल्याण के लिए काम करेंगे।बताते चले कि पत्रकारिता क्षेत्र में उनके योगदान और समर्पण के लिए यह जिम्मेदारी सौंपी गई है।
बता दे कि धीरेन्द्र अवाना नोएडा के नयाबांस गांव के निवासी हैं। वे लंबे समय से पत्रकारों के हित के लिए निरंतर काम कर रहे हैं।उनकी कार्यशैली और समर्पण को देखते हुए संगठन ने गौतम बुद्ध नगर का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया।इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार हाकिम सिंह,उदय अवाना, जुनैद,संगीता चौधरी,प्रियंका शर्मा,पवन कुमार,संदीप कुमार,
पंकजराज,गौरव,मंतोष, बलवीर, अशोक पंडित, सुरेश चौहान, नेमचंद चौधरी, पवन डेढ़ा, वीरेश शर्मा,परमजीत नागर आदि मौजूद रहे।

नोएडा मीडिया कप 2024 सीजन-2 का शानदार समापन, एक्टिव एनजीओ ने जीती खिताबी जंग

आज का मुद्दा-नोएडा। नोएडा मीडिया क्लब द्वारा आयोजित नोएडा मीडिया कप 2024 सीजन-2 का शानदार समापन शनिवार को हुआ। इस टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में एनईए और एक्टिव एनजीओ की टीमों के बीच एक रोमांचक संघर्ष देखने को मिला, जिसमें एक्टिव एनजीओ की टीम 105 रनों से जीत हासिल कर चैंपियन बनी। इस टूर्नामेंट में कुल आठ टीमें शामिल थीं, जिनमें नोएडा मीडिया क्लब, ग्रेटर नोएडा मीडिया क्लब, नोवरा, फोनरवा और नेटवर्क-10 जैसी टीमों ने भाग लिया। फाइनल मुकाबला एक दिलचस्प और प्रतियोगी मैच साबित हुआ, जिसे एक्टिव एनजीओ ने बड़ी जीत के साथ खत्म किया।

फाइनल मुकाबले में टॉस जीतकर एनईए की टीम ने पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। एक्टिव एनजीओ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 289 रनों का विशाल लक्ष्य खड़ा किया।

इस शानदार पारी में कृष्ण यादव ने 49 गेंदों पर 122 रन बनाए, वहीं योगेश यादव ने 28 गेंदों में 63 रन बनाकर अपनी टीम का कुल स्कोर बढ़ाया। इसके अलावा, रोहित यादव ने मात्र 15 गेंदों पर 55 रनों की नाबाद पारी खेली, जिसने टीम को एक मजबूत स्थिति में पहुंचाया। एनईए की गेंदबाजी में अंकित, हेमंत, आबिद और वीरू ने एक-एक विकेट लिया, लेकिन एक्टिव एनजीओ की टीम के बल्लेबाजों के सामने उनकी गेंदबाजी थोड़ी फीकी साबित हुई। लक्ष्य का पीछा करने उतरी एनईए की टीम ने पूरे मैच के दौरान संघर्ष किया, लेकिन वे सिर्फ 14.5 ओवर में सभी विकेट गंवाकर 184 रन ही बना सकी। एक्टिव एनजीओ ने इस तरह से 105 रनों से जीत दर्ज की और नोएडा मीडिया कप 2024 का खिताब अपने नाम किया।

विजेता और उपवेजिताओं को किया पुरस्कृत

फाइनल मैच में कृष्ण यादव को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए 'मैन ऑफ द मैच' चुना गया, जबकि प्रदेश नेय्यर को 'फाइटर ऑफ द मैच' का अवार्ड दिया गया। टूर्नामेंट में सबसे अच्छे प्रदर्शन के लिए रोहित यादव को 'सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज' और अंकित गुप्ता को 'सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज' का पुरस्कार प्रदान किया गया। टूर्नामेंट के समापन समारोह में प्रमुख अतिथियों के रूप में उद्योगपति डॉ. पीयूष द्विवेदी, एनएईसी के चेयरमैन ललित ठुकराल, उद्यमी डीडी तिवारी और मदरलैंड अस्पताल के प्रबंध निदेशक डॉ. बबित कुमार ने विजेता और उपविजेता टीमों को पुरस्कार वितरित किए। नोएडा मीडिया क्लब की खेल समिति के अध्यक्ष राजकुमार चौधरी और महासचिव लोकेश चौहान ने सभी अतिथियों को प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। इस दौरान एनईए के अध्यक्ष विपिन मल्हन, सुधीर श्रीवास्तव, वीके सेठ, नीरू शर्मा, रज्जन तिवारी, अशोक श्रीवास्तव, रंजन तोमर और अविनाश सिंह आदि मौजूद रहे।

राज्य मंत्री ने भंगेल सेतु निगम के निर्माण का लिया जायजा

नोएडा। नोएडा में लोक निर्माण विभाग के राज्य मंत्री कुंवर ब्रिजेश सिंह ने शनिवार को महत्वपूर्ण भंगेल एलिवेटेड रोड परियोजना का निरीक्षण किया है। इस दौरान उनके साथ सांसद, डीएम और कई अधिकारी मौजूद रहे। कुंवर ब्रिजेश सिंह ने 4.5 किलोमीटर लंबे इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट को जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। कोरोना काल से अटकी परियोजना से क्षेत्र के लोग काफी परेशान है।

परियोजना की कुल लागत 5 अरब 65 करोड़ 61 लाख रुपये है, जो 5.5 किलोमीटर में 6-लेन सेतु के निर्माण को लक्षित करती है। निरीक्षण में सांसद डॉ. महेश शर्मा, जिलाध्यक्ष मनोज गुप्ता, नोएडा प्राधिकरण और सेतु निगम के अधिकारी भी मौजूद रहे। हालांकि, परियोजना में लगातार देरी चिंता का विषय है। परियोजना के पूरे होने की तय तारीख दिसंबर 2022 थी, लेकिन अभी तक केवल 80 प्रतिशत काम ही पूरा हुआ है। बरौला टी प्वाइंट पर प्रस्तावित चार लूप का निर्माण भी ठंडे बस्ते में है, जिससे सात एक्स सेक्टरों की कनेक्टिविटी प्रभावित हो रही है।

सेक्टर-49 से 82 तक के निवासी और व्यापारी परियोजना में देरी और बढ़ती लागत से परेशान हैं। यह परियोजना नोएडा के विकास में एक बड़ी चुनौती बनी हुई है, जिससे आम जनता को भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। राज्य मंत्री के त्वरित निदेशों के बाद अब उम्मीद है कि परियोजना जल्द ही पूरी हो सकेगी। लोगों का कहना है कि विकास की इस महत्वपूर्ण परियोजना पर नजर रखे रखने की आवश्यकता है, ताकि नोएडा के निवासियों को जल्द से जल्द इसका लाभ मिल सके।

नोएडा मीडिया कप 2024 सीजन-2 का शानदार समापन, एक्टिव एनजीओ जीती

आज का मुद्दा

नोएडा। नोएडा मीडिया क्लब द्वारा आयोजित नोएडा मीडिया कप 2024 सीजन-2 का शानदार समापन शनिवार को हुआ। इस टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में एनईए और एक्टिव एनजीओ की टीमों के बीच एक रोमांचक संघर्ष देखने को मिला, जिसमें एक्टिव एनजीओ की टीम 105 रनों से जीत हासिल कर चैंपियन बनी। इस टूर्नामेंट में कुल आठ टीमें शामिल थीं, जिनमें नोएडा मीडिया क्लब, ग्रेटर नोएडा मीडिया क्लब, नोवरा, फोनरवा और नेटवर्क-10 जैसी टीमों ने भाग लिया। फाइनल मुकाबला एक दिलचस्प और प्रतियोगी मैच साबित हुआ, जिसे एक्टिव एनजीओ ने बड़ी जीत के साथ खत्म किया।

फाइनल मुकाबले में टॉस जीतकर एनईए की टीम ने पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। एक्टिव एनजीओ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 289 रनों का विशाल लक्ष्य खड़ा किया। इस शानदार पारी में कृष्ण यादव ने 49 गेंदों में 122 रन बनाए, वहीं योगेश यादव ने 28 गेंदों में 63 रन बनाकर अपनी टीम का कुल स्कोर बढ़ाया। इसके अलावा, रोहित यादव ने मात्र 15 गेंदों पर 55 रनों की नाबाद पारी खेली, जिसने टीम को एक मजबूत स्थिति में पहुंचाया। एनईए की गेंदबाजी में अंकित, हेमंत, आबिद और वीरू ने एक-एक विकेट लिया, लेकिन एक्टिव एनजीओ की टीम के बल्लेबाजों के सामने उनकी गेंदबाजी थोड़ी फीकी साबित हुई। लक्ष्य का पीछा करने उतरी एनईए की टीम ने पूरे मैच के दौरान संघर्ष किया, लेकिन वे सिर्फ 14.5 ओवर में सभी विकेट गंवाकर 184 रन ही बना सकी। एक्टिव एनजीओ ने इस तरह से 105 रनों से जीत दर्ज की और नोएडा मीडिया कप 2024 का खिताब अपने नाम किया।

विजेता और उपवेजिताओं को किया पुरस्कृत

फाइनल मैच में कृष्ण यादव को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए 'मैन ऑफ द मैच' चुना गया, जबकि प्रदेश नेय्यर को 'फाइटर ऑफ द मैच' का अवार्ड दिया गया। टूर्नामेंट में सबसे अच्छे प्रदर्शन के लिए रोहित यादव को 'सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज' और अंकित गुप्ता को 'सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज' का पुरस्कार प्रदान किया गया। टूर्नामेंट के समापन समारोह में प्रमुख अतिथियों के रूप में उद्योगपति डॉ. पीयूष द्विवेदी, एनएईसी के चेयरमैन ललित ठुकराल, उद्यमी डीडी तिवारी और मदरलैंड अस्पताल के प्रबंध निदेशक डॉ. बबित कुमार ने विजेता और उपविजेता टीमों को पुरस्कार वितरित किए। नोएडा मीडिया क्लब की खेल समिति के अध्यक्ष राजकुमार चौधरी और महासचिव लोकेश चौहान ने सभी अतिथियों को प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। इस दौरान एनईए के अध्यक्ष विपिन मल्हन, सुधीर श्रीवास्तव, वीके सेठ, नीरू शर्मा, रज्जन तिवारी, अशोक श्रीवास्तव, रंजन तोमर और अविनाश सिंह आदि मौजूद रहे।

कनारसी ने 2 विकेट से शिकस्त देकर जुनेदपुर को हराया

दनकौर : क्षेत्र स्थित ध्रुव क्रिकेट ग्राउंड पर कनारसी व जुनेदपुर के बीच चल रही क्रिकेट मैच में कनारसी ने जुनेदपुर को 2 विकेट हराया सुमित नागर को मैन आफ दी मैच का पुरस्कार दिया गया जुनेदपुर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 19.2 ओवरों में 120/10 का लक्ष्य दिया जिसे कनारसी ने 18.2ओवर में 123/8 जीत हासिल की शानदार गेंदबाजी करते हुए अंकित नागर,ललित नागर ने 2-2 विकेट झटके कप्तान दीपक नागर के नेतृत्व में टीम ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन किया।बल्लेबाज सोनू निगम ,हरीश विकास प्रधान ,लोकेश, अन्य खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ट्रॉफी व 510000 रुपए की धन राशि दी।

आईएमएस की टीम स्मार्ट इंडिया हैकथॉन में अव्वल

नोएडा। आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन में आईएमएस नोएडा की टीम अव्वल रही।11 दिसंबर से 13 दिसंबर तक आयोजित कार्यक्रम के दौरान आईएमएस नोएडा की टीम ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित अनूठी सोच, नवाचार एवं तकनीकी कौशल से निर्णायक मंडल को प्रभावित किया। इस प्रतियोगिता में आईएमएस की टीम को गोदरेज एप्लायंसेज के लिए एआई आधारित सस्टेनेबल आइडिया के लिए पुरस्कृत किया गया।आईआईटी भुवनेश्वर में स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन के विजयी टीम को इस सफलता के लिए आईएमएस नोएडा के डायरेक्टर जनरल प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन ने बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य छात्रों को आधुनिक तकनीकों और व्यावहारिक ज्ञान के साथ सक्षम बनाना है। यह उपलब्धि हमारी शिक्षा प्रणाली और छात्रों के कठोर परिश्रम का परिणाम है। आईएमएस नोएडा का हमेशा से प्रयास रहा है कि हम छात्रों को नवाचार और सृजनशीलता के लिए प्रेरित करे। यह उपलब्धि न केवल संस्थान के लिए गौरव का विषय है, बल्कि यह छात्रों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरणा भी प्रदान करती है।वहीं आईएमएस स्कूल ऑफ आईटी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ.) अवधेश कुमार गुप्ता ने बताया कि संस्थान के 6 बच्चों की टीम आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन में हिस्सा लिया। आईएमएस की टीम का समाधान स्मार्ट संसाधन जैसे रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, वॉशिंग मशीन और डेजर्ट एयर कूलर के उपयोग में ऊर्जा एवं जल के संरक्षण के लिए सस्टेनेबल पर आधारित था। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले संस्थान की टीम ने 1 लाख रुपये की राशि के साथ प्रथम पुरस्कार जीता है।

आईएमएस की टीम स्मार्ट इंडिया हैकथॉन में अव्वल

नोएडा।आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन में आईएमएस नोएडा की टीम अव्वल रही।11 दिसंबर से 13 दिसंबर तक आयोजित कार्यक्रम के दौरान आईएमएस नोएडा की टीम ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित अनूठी सोच, नवाचार एवं तकनीकी कौशल से निर्णायक मंडल को प्रभावित किया। इस प्रतियोगिता में आईएमएस की टीम को गोदरेज एप्लायंसेज के लिए एआई आधारित सस्टेनेबल आइडिया के लिए पुरस्कृत किया गया।आईआईटी भुवनेश्वर में स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन के विजयी टीम को इस सफलता के लिए आईएमएस नोएडा के डायरेक्टर जनरल प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन ने बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य छात्रों को आधुनिक तकनीकों और व्यावहारिक ज्ञान के साथ सक्षम बनाना है। यह उपलब्धि हमारी शिक्षा प्रणाली और छात्रों के कठोर परिश्रम का परिणाम है। आईएमएस नोएडा का हमेशा से प्रयास रहा है कि हम छात्रों को नवाचार और सृजनशीलता के लिए प्रेरित करे। यह उपलब्धि न केवल संस्थान के लिए गौरव का विषय है, बल्कि यह छात्रों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरणा भी प्रदान करती है।वहीं आईएमएस स्कूल ऑफ आईटी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ.) अवधेश कुमार गुप्ता ने बताया कि संस्थान के 6 बच्चों की टीम आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन में हिस्सा लिया। आईएमएस की टीम का समाधान स्मार्ट संसाधन जैसे रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, वॉशिंग मशीन और डेजर्ट एयर कूलर के उपयोग में ऊर्जा एवं जल के संरक्षण के लिए सस्टेनेबल पर आधारित था। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले संस्थान की टीम ने 1 लाख रुपये की राशि के साथ प्रथम पुरस्कार जीता है।

इंजीनियर युवक ने की आत्महत्या

आज का मुद्दानोएडा। सेक्टर-73 में एक इंजीनियर युवक ने फंदे से लटककर आत्महत्या कर ली। मृतक मयंक शाहजहांपुर का रहने वाला था। पिछले चार सालों से एक युवती के साथ सहमति संबंध में रह रहा था। युवक ने आत्महत्या से पहले एक सुसाइड नोट भी छोड़ा। जिसमें अपनी परेशानियों और मानसिक तनाव का जिक्र किया। पुलिस के मुताबिक मयंक ने अपने सुसाइड नोट में लिखा है कि उसके सहमति संबंध में रह रही युवती उसे बार-बार टोकती थी। वह कहती थी कि वह बिना काम किए खाना खाता है। इस प्रकार की टोका-टोकी और नौकरी न मिलने के कारण मयंक मानसिक तनाव से गुजर रहा था। जिससे हारकर उसने अपनी जीवनलीला समाप्त करने का निर्णय लिया। मयंक बीटेक पास था और पिछले कुछ समय से बेरोजगारी की समस्या से परेशान था। पढ़ाई के बाद वह किसी अच्छी नौकरी की तलाश में था, लेकिन सफलता नहीं मिल पाने से वह अवसाद में चला गया। युवती के साथ संबंधों में आई खटास ने उसकी परेशानी और बढ़ा दी।

शुक्रवार शाम करीब 4:17 बजे पुलिस को घटना की सूचना मिली। मयंक सेक्टर-73 में शौर्य बैंक्वेट हॉल के पीछे एक मकान की तीसरी मंजिल पर किराए पर रहता था। मौके पर पहुंची पुलिस को उसका शव फंदे से लटकता हुआ मिला। पुलिस ने मयंक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उसके परिजनों को घटना की जानकारी दे दी गई है। पुलिस इस मामले में युवती और अन्य पहलुओं की जांच कर रही है।-